ISBN : 978-93-7029-376-2

अक्टूबर, 2025 | वर्ष - 04 | अंक - 10

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

प्रकाशक

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)

सम्पादक
डॉ. विमल कुमार दूबे (प्रधान संपादक)
डॉ. साध्वी नन्दन पाण्डेय (संपादक)

संस्करण
संस्करण : 2025
पृष्ठ : 36
आकार : A4

प्रकाशक
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर
उत्तर प्रदेश - 273007
फोन : 9999764424, 8765005177
ईमेल : mguniversitygkp@mgug.ac.in

सम्पादकीय

एकीकृत चिकित्सा : आरोग्य का नया भारतीय पथ

आज का भारत स्वास्थ्य-चिंतन के एक नए युग में प्रवेश कर चुका है। यह वह समय है जब चिकित्सा केवल रोग-निवारण का साधन नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित, समर्थ और स्वस्थ बनाने का एक व्यापक तंत्र बन रही है। इसी परिवर्तन का प्रमुख आधार है एकीकृत चिकित्सा जहाँ आधुनिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान-संस्कृति साथ मिलकर एक समग्र स्वास्थ्य मॉडल प्रस्तुत कर रहे हैं। यह मॉडल केवल चिकित्सकीय विकल्पों का मिश्रण नहीं, बल्कि रोग से नहीं, रोगी से संवाद की भारतीय दृष्टि का पुनरुत्थान है। भारत की परंपरा में आरोग्य का अर्थ केवल शरीर की स्वस्थता नहीं, बल्कि मन बुद्धि, इंद्रियों, आहार, आचरण और सामाजिक वातावरण सभी का संतुलन है। चरक-संहिता का सिद्धांत 'स्वस्थस्य स्वास्थ्य-रक्षणम, आतुरस्य विकार-प्रशमनम' आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना हजारों वर्ष पूर्व था। यह सिद्धांत आधुनिक स्वास्थ्य-नीति के प्रिवेंटिव एण्ड प्रमोटिव हैल्थ का मूलाधार बन चुका है। एकीकृत चिकित्सा इसी सिद्धांत को आधुनिक वैज्ञानिकता के साथ जोड़कर रोगी को संपूर्ण देखभाल का अनुभव प्रदान करती है। अक्सर यह भ्रम फैलाया जाता है कि आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद एक-दूसरे के विकल्प हैं। यह विचार न वैज्ञानिक है, न व्यावहारिक। दोनों की अपनी विशिष्ट शक्तियाँ हैं। आधुनिक चिकित्सा तीव्र रोगों, आपातकालीन स्थितियों, शल्य-चिकित्सा और निदान में अद्वितीय है। तो वहीं आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा जीवनशैली संबंधी असंतुलनों, क्रॉनिक बीमारियों और मानसिक स्वास्थ्य में अत्यंत प्रभावी हैं।

आज विश्वभर में मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा, थायराइड, अवसाद, अनिद्रा जैसे विकार बढ़ रहे हैं। ये रोग केवल दवाओं से पूर्णतः नियंत्रित नहीं होते। यह सुधारात्मक जीवन-शैली, योग-ध्यान, आयुर्वेदिक आहार-विधान, पंचकर्म और मनोवैज्ञनिक परामर्श का एक समग्र समाधान प्रदान करते हैं। इसलिए आज वैज्ञानिक समुदाय इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि- 'Modern medicine saves life, but integrated medicine improves the quality of life.' महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने एकीकृत चिकित्सा के क्षेत्र में पूर्वांचल ही नहीं, बल्कि पूरे उत्तर भारत में एक विशिष्ट पहचान बनाए है। यहाँ आधुनिक चिकित्सा, आयुर्वेद, योग, नर्सिंग, पैरामेडिकल, पंचकर्म सुविधा और IKS कार्यक्रमों के मध्य अंतर-अनुशासनात्मक सेतु विकसित किए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय के चिकित्सालयों में योग-परामर्श, आयुर्वेदिक उपचार और आधुनिक चिकित्सा की संयुक्त सेवाएँ उपलब्ध हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में आयुष आधारित जागरूकता, पोषण-सुधार और मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। गांवों को गोद लेकर उनमें स्वास्थ्य, शिक्षा, आदि विषयों से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम संचालित कर ग्रामीणों को जागरूक किए जा रहे हैं। निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर के माध्यमों से चिकित्सक मात्र दवाएं ही संतुलित जीवन के प्रति मार्गदर्शन भी कर रहे हैं। यह माडल संदेश देता है कि भविष्य की चिकित्सा वही है जहाँ चिकित्सक केवल दवाएँ देने वाला नहीं, बल्कि रोगी के जीवन को संतुलित करने वाला मार्गदर्शक हो। मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित की चर्चा करें तो आज तनाव, अवसाद, क्रोध, अनिद्रा और सामाजिक असंतुलन हर वर्ग के लोगों को प्रभावित कर रहे हैं। आधुनिक मनोचिकित्सा आवश्यक है, परंतु इसके साथ योग, प्राणायाम, ध्यान, आहार-शुद्धि, दिनचर्या और आध्यात्मिक मनोविज्ञान का सम्मिलन उपचार को अधिक प्रभावी बनाता है।

गोरखनाथ परंपरा स्वयं धैर्य, साधना और मनःशांति का प्रतीक है। इस सांस्कृतिक विरासत और आधुनिक शोध को साथ लाकर विश्वविद्यालय मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक नई दिशा स्थापित कर रहा है। एकीकृत चिकित्सा का वास्तविक लक्ष्य केवल रोगों से मुक्ति नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवन-संस्कृति का निर्माण है जहाँ आहार प्रकृति-संगत हो, दिनचर्या संतुलित हो, संबंध स्वस्थ हों, मन शांत और केंद्रित रहे, शरीर सतत सक्रिय और समर्थ रहें। यह मॉडल व्यक्ति को उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सजग बनाता है। यह उपचार नहीं, एक समग्र जीवन-दर्शन है। आज विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) एकीकृत चिकित्सा मॉडल को बढ़ावा दे रहा है। अमेरिका, यूरोप और एशिया के कई देशों में एकीकृत चिकित्सा आधारित चिकित्सालयों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। वैकल्पिक चिकित्सा पर शोध बढ़ रहा है। ऐसे समय में भारत में जहाँ योग और आयुर्वेद की जड़ें हजारों वर्ष पुरानी हैं तो इस क्षेत्र में नेतृत्व कर सकता है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय का प्रयास इसी वैश्विक बदलाव में भारत को एक अग्रणी स्थान दिलाने की क्षमता रखता है। एकीकृत चिकित्सा आधुनिक विज्ञान और भारतीय ज्ञान परंपरा का संतुलित, वैज्ञानिक और मानवीय संगम है। यह हमारे स्वास्थ्य तंत्र को प्रतिक्रियात्मकता से रोकथाम-आधारित और समग्र स्वास्थ्य की ओर ले जाता है। प्रति वर्ष आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (आरोग्य संगम) का मुख्य विषय भी एकीकृत चिकित्सा ही है। आरोग्य पथ का यह अंक इसी विश्वास को समर्पित है कि आरोग्य केवल उपचार नहीं, बल्कि जीवन का पथ है, और एकीकृत चिकित्सा उसी पथ को उज्ज्वल करने वाली भारतीय दृष्टि।

आत्मदीपो भव

दीपावली केवल दीपों का उत्सव नहीं, बल्कि आत्मप्रकाश, आरोग्य, अनुशासन और राष्ट्रोत्थान का अनुपम अवसर है। परंपरा में यह पर्व पंद्रह दिनों तक मनाया जाता रहा है। धन्वंतरि त्रयोदशी से लेकर यम द्वितीया तक। प्रत्येक दिन मनुष्य को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आरोग्य का अनूठा संदेश देता है। विद्यार्थियो, युवाओं और जनमानस के लिए यह पर्व जीवन-व्यवस्था को प्रकाशमय करने की प्रेरणा का उत्सव है।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को धनतेरस मनाई जाती है। इसी दिन समुद्र मंथन से भगवान धन्वन्तरि आयुर्वेद के जनक अमृत कलश सहित प्रकट हुए यह दिन हमें याद दिलाता है कि धन से बड़ा धन 'स्वास्थ्य' है।यही कारण है कि लक्ष्मी पूजा से पूर्व धन्वंतरि स्मरण का विधान है। आयुर्वेद कहता है

'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्, आतुरस्य विकार प्रशमनम्। च'

आज के युवाओं के लिए यह सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक है. समय पर भोजन, पर्याप्त जल सेवन, प्राणायाम, योग, नशामुक्ति, डिजिटल संतुलन। ये छोटे-छोटे नियम जीवन में अमृत के समान हैं। धनतेरस पर दीपदान और स्वच्छता का महत्व हमें समाज और राष्ट्र को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने की प्रेरणा देता है। नरक चतुर्दशी तो दोष निवारण और आत्मशुद्धि का दिन इस दिन सूर्यपूर्व स्नान, तैलाभ्यंग और चौमुखा दीपदान मनुष्य के भीतर के अंधकार राग, द्वेष, आलस्य, तनाव को मिटाने का संदेश देता है। नरकासुर-वध केवल पौराणिक कथा नहीं, बल्कि स्वयं के भीतर के नकारात्मक प्रवृत्तियों पर विजय का प्रतीक है।

विद्यार्थियों के लिए यह पर्व कहता है आलस्य रूपी 'नरकासुर' का अंत करो, समय प्रबंधन अपनाओ, विचारों, लक्ष्य और व्यवहार में उजाला लाओ। कार्तिक अमावस्या की रात्रि, जब बाहर अंधकार होता है, उस समय दीपावली हमें भीतर का दीप प्रज्वलित करने की प्रेरणा देती है। स्वच्छता, संयम, सदाचार, कर्तव्य और दान ये दीपावली के मूल स्तंभ हैं। विद्यार्थियों के लिए दीपावली का महान संदेश मन में लक्ष्य का दीप जलाओ, अध्ययन में निरंतरता अपनाओ, ईमानदारी और नैतिकता को जीवन में उतारो, स्वयं को उज्ज्वल बनाकर समाज और राष्ट्र को प्रकाश दो। महालक्ष्मी कर्म भाव प्रकाशिनी हैं इसलिए इनका पूजन का गूढ़ अर्थ यही है कि सच्ची लक्ष्मी परिश्रम, ज्ञान, स्वास्थ्य और चरित्र से प्राप्त होती है। अन्नकूट या गोवर्धन पूजा प्रकृति संरक्षण और कर्तव्य का पर्व कहा जाता है। गोवर्धन पूजा हमें प्रकृति, गौ-सम्पदा और कृषि के प्रति आभार का संदेश देती है। पर्यावरण संरक्षण, जल, सुरक्षा, पशु संरक्षण के बिना कोई भी राष्ट्र समृद्ध नहीं हो सकता। 'अन्नकूट' जीवन में संतुलन, समर्पण और साझा संस्कृति का प्रतीक है। यह बताता है कि समाज तभी प्रगति करता है जब सभी वर्गों का पेट भरता है। इसलिए अन्नदान, सेवा और संवेदना आवश्यक हैं।

यम द्वितीया केवल भाई-बहन का पर्व नहीं, बल्कि परस्पर संरक्षण और स्नेह बंधन की संस्कृति का उत्सव है। भारत की शक्ति उसकी परिवार संस्था और सामाजिक संवेदना में है। युवा और विद्यार्थी यदि माता-पिता का सम्मान, परिवार के साथ संवाद, सामाजिक सौहार्द जैसी परंपराओं को अपनाते हैं। तो राष्ट्र की जड़ें अत्यंत मजबूत होती हैं। दीपावली का वास्तविक अर्थ है। 'मैं बदलूँगा, तभी समाज बदलेगा, तभी राष्ट्र प्रगति करेगा।' ईश्वर करे यह दीपोत्सव सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और जनमानस के जीवन में आरोग्य, ज्ञान, समृद्धि और उज्ज्वल भविष्य का प्रकाश फैलाए।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम : चरित्र-प्रेरणा का शाश्वत आदर्श

भारतीय संस्कृति के विराट आकाश में यदि किसी आदर्श व्यक्तित्व का तेज सूर्य की भाँति सर्वाधिक दमकता है, तो वह हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम। युगों से उनका चरित्र केवल धर्मिक आस्था का विषय भर नहीं रहा, बल्कि जीवन-दर्शन, नैतिकता, कर्तव्य परायणता और आदर्श शासन का प्रेरक मानदण्ड भी रहा है। 'राम' भारतीय जीवन के हर क्षेत्र में आचरण का आदर्श हैं। नागरिक के रूप में, पुत्र के रूप में, पति के रूप में, राजा के रूप में तथा मानवता के संरक्षक के रूप में। वह सत्य, धर्म और कर्तव्य के प्रति अदम्य निष्ठा की साक्षात मूर्ति हैं। रामो विग्रहवान धर्मः उनका सम्पूर्ण जीवन एक संदेश देता है कि कर्तव्य किसी भी परिस्थिति में सर्वोपरि है। कैकेयी के दो वरों की परिणति में जब राज्याभिषेक से वनवास की स्थिति बनी, तब भी उन्होंने बिना विचलित हुए आज्ञापालन को धर्म माना। समस्त अयोध्या उनके साथ चलने को उद्यत थी, परंतु राम ने पिता की वचनबद्धता और राज्य की मर्यादा को प्राथमिकता दी। यह चरित्र हमें सिखाता है कि सुख-सुविधा का त्याग कर भी धर्म और सत्य के मार्ग पर चलना ही जीवन का वास्तविक वैभव है।

रामराज्य भारतीय शासन-चिन्तन का आदर्श स्वरूप है। न्याय, समता, जनकल्याण और सुरक्षा ये सभी तत्व रामराज्य में चरम पर उपस्थित थे। प्रजा को पिता के समान मानने वाले राजा राम केवल शासनकर्ता नहीं थे, बल्कि जनता के सुख-दुःख में सहभागी थे। यह वह समय था जब 'नर नारी सब समान सुख भोगहिं' किसी के जीवन में भय, अन्याय, भेदभाव या असहायता का अनुभव नहीं था। आधुनिक युग का प्रत्येक शासक राम के इसी लोककल्याण भाव से प्रेरणा ले सकता है। वे त्याग, संतुलन और उदारता का अनोखे समन्वय हैं उनका चरित्र कठोरता और करुणा दोनों का संतुलित संगम है। वे योद्धा भी हैं और सहज सहृदय भी। शबरी के जूठे बेर हों या निषादराज की मित्रता, भीलनी से स्नेह हो या हनुमान के प्रति वात्सल्य राम हर व्यक्ति में मानवता और स्नेह देखते हैं। वे समाज में समानता और स्वीकृति का अद्वितीय संदेश देते हैं कि उच्च-नीच का भेद ईश्वर की दृष्टि में नहीं, यह केवल मनुष्यों की भ्रान्ति है।

उनका सङ्कल्प निश्चर हीन करहुं महि दुष्ट-ध्वंस और धर्म-संरक्षण के लिए था। धर्म की स्थापना और दुष्टों के विनाश हेतु राम का पराक्रम अप्रतिम है। रावण के अहंकार, अत्याचार और अधर्म के विरुद्ध उन्होंने न केवल युद्ध किया, बल्कि यह भी सिखाया कि अन्याय चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, सत्य की विजय सुनिश्चित है। यह संदेश हर युग में उतना ही प्रासंगिक हैं। अन्याय से कभी समझौता नहीं, बल्कि साहसपूर्वक उसका प्रतिकार ही धर्म है। वे आदर्श पारिवारिक एवं सामाजिक मर्यादा पालन के अद्वितीय उदाहरण हैं। राम का समस्त जीवन 'मर्यादा' का पाठ है। पिता के प्रति भक्ति, माता के प्रति सम्मान, छोटे भाई भरत और लक्ष्मण के प्रति असीम स्नेह, पत्नी सीता के प्रति आदर्श निष्ठा, गुरुओं एवं समाज के प्रति विनम्रता। उन्होंने प्रत्येक सम्बन्ध को धर्म की दृष्टि से देखा और निभाया। आधुनिक समाज जो परिवार, सम्बन्ध और कर्तव्यबोध की चुनौतियों से गुजर रहा है, उसके लिए राम का आचरण एक स्थायी समाधान प्रस्तुत करता है।

उनके चरित्र-शक्ति का लोकव्यापी प्रभाव पड़ा जो आज भी जनमानस में व्याप्त है। उनके के गुणों का इतना व्यापक प्रभाव है कि भारत ही नहीं, सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्व एशिया थाईलैंड, इंडोनेशिया, कम्बोडिया से लेकर नेपाल और श्रीलंका तक रामकथा की जड़ें दिखाई देती हैं। इससे स्पष्ट है कि राम केवल एक ऐतिहासिक पुरुष नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना के शाश्वत प्रतीक हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम वह आदर्श हैं, जिनमें नीति, विनय, साहस, करुणा, त्याग और न्याय इन सभी का अद्वितीय समन्वय मिलता है। राम का जीवन यह प्रेरणा देता है कि मनुष्य किसी भी भूमिका में हो, यदि वह अपनी मर्यादा और कर्तव्य का पालन करता है, तो समाज में कल्याण का प्रकाश फैल सकता है। आज आवश्यकता है कि हम 'राम' को केवल पूजा का विषय न मानकर, जीवन-आचरण का पथप्रदर्शक बनाएं तभी समाज में सत्य, नैतिकता और सद्भाव का नवप्रकाश फैल सकेगा।

दीक्षारंभ और व्हाइट कोट समारोह

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर

नवागत विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए माननीय कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह व प्राचार्य डॉ. अनुराग श्रीवास्तव

दिनांकः 06 अक्टूबर, 2025 श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर के एमबीबीएस के नवीन विद्यार्थियों के दीक्षारम्भ और व्हाइट कोट समारोह का उद्घाटन नए संकल्पों के साथ हुआ।

दीक्षारम्भ में नव विद्यार्थियों को संबोधित करते कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखानाथ विश्वविद्यालय शिक्षा के मंदिर के साथ सीखने का मंदिर है जहां चिकित्सा क्षेत्र को धारण करना अर्थात कर्तव्यों के प्रति आजीवन प्रतिबद्धता है।

चिकित्सा सेवा के पहले पायदान पर विश्व के सबसे कठिन परीक्षा को पास करके आप सभी ने लाखों विद्यार्थियों के साथ कड़ी स्पर्धा देकर अपने मेहनत, लगन और तपस्या से स्वयं को सिद्ध कर नए संकल्पों को ग्रहण किया है। आपको अपने शिक्षा व्यवस्था के अनुसार स्वयं को अनुशासन की परिधि में रखना होगा जिसमें तप के यहां से निकलने वाला चिकित्सक सिर्फ डिग्री ही नहीं जीवन मूल्यों का का संकल्प लेकर समाज को चिकित्सा सेवा देगा । यहां भारत के विविध राज्यों से आए विद्यार्थियों के मेल से सांस्कृतिक वातावरण भी पुष्पित होगा।

चिकित्सा सेवा दवा की पर्ची लिखने की मात्र कला नहीं है। बल्कि समाज को एक सुखद एवं स्वस्थ जीवन देने की संजीवनी विद्या है, नूतन विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि नाथ गुरुओं के साथ गुरु गोरखनाथ की महिमा है जो अपने उच्च शिक्षा के लिए इस विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने जा रहे हैं। अपने जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए कुलपति प्रो सुरिंदर सिंह ने कहा कि रोगी चिकित्सक को भगवान मानता है, आपकी की भी जिम्मेदारी है कि व्हाइट कोट को पहन कर सेवा भाव से राष्ट्र को निरोगी बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे । आप सभी को स्वयं से संकल्प लेना होगा कि अपने अध्ययन और चिकित्सकीय अनुभवों से समाज और राष्ट्र को स्वस्थ स्वास्थ्य की संजीवनी देंगे ।

कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव ने एमबीबीएस के द्वितीय बैच का स्वागत करते हुए नवागत विद्यार्थियों को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के उद्देश्य और संकल्पों से परिचित कराते हुए कहा कि गोरखनाथ विश्वविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य लोक कल्याण है। हम सेवा भाव को केन्द्र में रखकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद लोक कल्याण की भावना लेकर अपने चिकित्सा और शिक्षा सेवाओं के साथ सामाजिक, आध्यात्मिक भाव से चेतना, चरित्र और चिंतन के भाव से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और चिकित्सकीय सेवा उपलब्ध करा रहा है।

गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में यह विश्वविद्यालय मेडिकल के क्षेत्र में नया कीर्तिमान और प्रतिमान स्थापित करने को तैयार है। यह विश्वविद्यालय शिक्षा, चिकित्सा से पूर्वांचल ही नहीं संपूर्ण देश का रोल मॉडल बनकर सभी का मार्ग प्रशस्त करेगा।

एमबीबीएस प्राचार्य डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में पूर्वाचल के लिए वरदान साबित हो रहा है। आने वाले समय में नए चुनौतियों और संभावनाओं के साथ चिकित्सा में आने वाले नूतन प्रयोगों, शोध कार्यों से चिकित्सा सेवा का सुदृढ़ बनाने का संकल्प लेना होगा। स्वास्थ्य शिक्षा में अन्वेषकीय दृष्टि जन जन की उत्कृष्ट चिकित्सकीय सेवा देने के लिए नए युवा डॉक्टर्स की विश्व स्तर पर मांग है इसके लिए हमें स्वयं को नई चुनौतियों के अनुसार तैयार रहना होगा। चिकित्सकीय क्षेत्र में नूतन शोध एवं अनुसंधान को अध्ययन करके जन सेवा का संकल्प मन से पूरा करना होगा।

फैकल्टी ऑफ मेडिकल साइंसेज के अधिष्ठाता डॉ. चंदशेखर मूर्ति ने दीक्षारम्भ को संबोधित करते हुए कहा कि अनुशासन का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। आप कार्यों को भार की तरह न लें, इन्हें आप अपनी पसंद बनाएं इससे कार्य भार नहीं लगेगा। उन्होंने छात्रों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि हमें उम्मीद है आप भविष्य में बहुत ही कुशल चिकित्सक बनेंगे। दीक्षारम्भ में नवविद्यार्थियों को सेवा, दया, ईमानदारी और समर्पण की शपथ दिलाया गया। व्हाइट कोट समारोह में डॉ. चंद्रशेखर ने कहा कि

व्हाइट कोट पहनना केवल अधिकार नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और सेवा भाव की शुरुआत है।

डॉक्टर का व्यवसाय सिर्फ नौकरी नहीं, बल्कि सेवाए आस्था और नैतिक जिम्मेदारी का प्रतीक है। पूर्ण विश्वास है आप सभी हमेशा अपने नीतिगत मूल्यों, करुणा और संवेदनशीलता को केंद्र में रखें और समाज सेवा के संकल्प के साथ आगे बढ़ेंगे।

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेंटर न केवल नवोदित डॉक्टरों की शिक्षा, व्यक्तित्व विकास और सामाजिक जिम्मेदारी का मार्ग प्रशस्त करता है बल्कि पूर्वांचल को चिकित्सा क्षेत्र में नयी ऊँचाइयों तक पहुंचाने का कार्य करता है। यह कॉलेज योगी आदित्यनाथ जी की दूरदर्शिता, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के प्रयास और प्रोफेशनल टीम के विजन का उत्कृष्ट उदाहरण है।

दीक्षारम्भ में नवविद्यार्थियों को डॉ. रघुराम आचार्य, डॉ. प्रशांत एस, डॉ. रोहित एलानी, अमित कुमार सिंह, डॉ. वर्षा मोकाशी, डॉ. के एल किंग और डॉ. तेजस्विनी मुप्पला ने संबोधित के विश्वविद्यालय के कार्यशैली से परिचित करवाया।

दीक्षारम्भ का संचालन राशि सिंह और सृजन ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ राजेश दसराज ने किया। समारोह में प्रमुख रूप से डॉ. हरिओम शरण, डॉ. विद्यासागर, डॉ. नीतेश कुमार, डॉ. पूनम श्रीवास्तव, डॉ. रामकुमार, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. प्रवीण गौतम, डॉ. ओंकारनाथ तिवारी, डॉ. शशिभूषण तिवारी, डॉ. विकास तिवारी, डॉ. बीना प्रजापति, डॉ. गौरव, डॉ. पूजा मिश्रा, अनिल कुमार पटेल, सहित अभिभावक, शिक्षक उपस्थित रहें।

एक दिवसीय योग शिविर

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

सीमा सुरक्षा बल के सैनिकों को योग कराते हुए योगाचार्य चन्द्रजीत यादव

दिनांकः 08 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अन्तर्गत गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, आयुर्वेद के तत्वावधान में आज SSB (सीमा सुरक्षा बल) कैम्प, फर्टिलाइज़र, गोरखपुर में एक दिवसीय योग शिविर का सफल आयोजन किया गया।

शिविर में स्वस्थवृत्त विभाग के योगाचार्य चन्द्रजीत यादव ने उपस्थित अधिकारियों एवं जवानों को विभिन्न योग क्रियाओं, सूक्ष्म योग अभ्यासों, योगासनों तथा प्राणायामों का प्रशिक्षण दिया। उन्होंने ताड़ासन, त्रिकोणासन, भुजंगासन, पश्चिमोत्तानासन, वज्रासन, पद्मासन जैसे योगासनों तथा अनुलोम–विलोम, कपालभाति, भ्रामरी, नाड़ी शोधन, दीर्घ श्वसन प्राणायाम का अभ्यास करवाया।

योगाचार्य ने बताया कि नियमित योगाभ्यास शरीर की लचीलापन, मानसिक स्थिरता, एकाग्रता और प्रतिरक्षा शक्ति को बढ़ाने में अत्यंत सहायक है।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS) के कार्यक्रम अधिकारी आचार्य साध्वी नन्दन पाण्डेय ने कहा कि योग केवल व्यायाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की वैज्ञानिक और आध्यात्मिक पद्धति है।

उन्होंने कहा कि एसएसबी के जवान अपने कठिन कर्तव्यों के बीच योग को अपनाकर मानसिक शांति और शारीरिक स्फूर्ति बनाए रख सकते हैं।

सभी प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक योगाभ्यास में भाग लिया और योगाचार्य द्वारा बताए गए आसनों एवं प्राणायामों को व्यवहार में लाने का संकल्प लिया।

शिविर में एसआई विशाल कुमार चौधरी, सहायक उप निरीक्षक संजीव कुमार, मुख्य आरक्षी नरेंद्र कुमार, सिपाही केशनाथ यादव, सिपाही संदीप कुमार, सिपाही अवनीत कुमार (मीडिया) सहित अधिकारी एवं जवान उपस्थित रहें।

शैक्षणिक भ्रमण

ऑफ नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल

नर्सिंग की छात्राओं ने रामगढ़ताल रामपुर स्थित जल संयन्त्र का भ्रमण किया

दिनांकः 09 अक्टूबर, 2025 को रामगढ़ ताल रामपुर, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में स्थित जल संयन्त्र का भ्रमण महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के नर्सिंग कॉलेज की छात्राओं ने किया। यह कॉलेज की तरफ से शैक्षणिक रहा। इसमें जीएनएम प्रथम वर्ष की कुल 50 छात्राएं एवं शिक्षिका (मिस प्रज्ञा मिश्रा और मिस प्रिया सिंह) शामिल रहीं। विश्वविद्यालय से संयन्त्र तक की कुल दूरी 18 किलोमीटर रही स छात्राओं को जल संयन्त्र के प्रभारी विवेक कुमार ने कुछ महत्तवपूर्ण जानकारियां दी, जिसमे सबसे पहले छात्राओं को जल संयन्त्र के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण कराया गया, उनको वहां के कुल संयंत्र प्रयोगशालाए प्रतिदिन कुल जल के सफाई का लागत, जल संयंत्र के विभिन्न तरीके, स्वास्थ्य सुविधाओं से जुड़े लाभ, वातावरण की सफाई.

सफाई इत्यादि से अवगत कराया स उन्होंने बताया कि सीवेज जल उपचार के लिए क्लोरीनीकरण अथवा अन्य कई केमिकल्स का इस्तेमल करते हुए मुख्य रूप से चार तरिके अपनाएं जाते हैं।

भौतिक एजैविक एरसायन और किचड़ जल उपचार इन तरीकों का पालन करके उचित जल की सभी दूषित पदार्थो को सूक्ष्म जीव से रहित किया जाता है और उपचार जल में परिवर्तित किया जाता है।

जो मानव उपयोग और पर्यावरण दोनों के लिए सुरक्षित होता है स

उन्होंने यह भी बताया कि गोरखपुर क्षेत्र में दो सीवेज उपचार संयन्त्र का निर्माण किया गया है जिसमें एक सूर्यकुंड में स्थित है स सरकार द्वारा प्रति वर्ष इसके लिए 66 लाख रुपए प्रदान किये जाते हैं। जिसमें से 6000 रुपये प्रति मिली प्रतिदिन का लागत है, अंत में वह कर्मचारियों की स्वास्थ्य सुविधाएं हेतु पीपीई किट, दवाइयां, आपात्कालिन प्रोटोकॉल, कुल कर्मचारियों की संख्या तथा उपकरणों इत्यादि के इस्तेमाल से जुड़ी जानकारियां दी।

शैक्षणिक भ्रमण ऑफ नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल

जल संयन्त्र की जानकारी प्राप्त करतीं नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 10 अक्टूबर, 2025 को रामगढ़ ताल रामपुर, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में स्थित जल संयन्त्र का भ्रमण महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के नर्सिंग कॉलेज की छात्राओं ने किया।

यह कॉलेज की तरफ से शैक्षणिक रहा, इसमें जीएनएम प्रथम वर्ष की कुल 50 छात्राएं एवं शिक्षिका (मिस प्रज्ञा मिश्रा और मिस प्रिया सिंह) शामिल रहीं।

विश्वविद्यालय से संयन्त्र तक की कुल दूरी 18 किलोमीटर रही। छात्राओं को जल संयन्त्र के प्रभारी विवेक कुमार ने कुछ महत्तवपूर्ण जानकारियां दी, जिसमे सबसे पहले छात्राओं को जल संयन्त्र के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण कराया गया, उनको वहां के कुल संयंत्र प्रयोगशाला, प्रतिदिन कुल जल के सफाई का लागत, जल संयंत्र के विभिन्न तरीके, स्वास्थ्य सुविधाओं से जुड़े लाभ, वातावरण की सफाई. सफाई इत्यादि से अवगत कराया।

उन्होंने बताया कि सीवेज जल उपचार के लिए क्लोरीनीकरण अथवा अन्य कई केमिकल्स का इस्तेमल करते हुए मुख्य रूप से चार तरिके अपनाएं जाते हैं।

भौतिक, जैविक एरसायन और किचड़ जल उपचार इन तरीकों का पालन करके उचित जल की सभी दूषित पदार्थो को सूक्ष्म जीव से रहित किया जाता है और उपचार जल में परिवर्तित किया जाता है, जो मानव उपयोग और पर्यावरण दोनों के लिए सुरक्षित होता है। उन्होंने यह भी बताया कि गोरखपुर क्षेत्र में दो सीवेज उपचार संयन्त्र का निर्माण किया गया है जिसमें एक सूर्यकुंड में स्थित है।

सरकार द्वारा प्रति वर्ष इसके लिए 66 लाख रुपए प्रदान किये जाते हैं, जिसमें से 6000 रुपये प्रति मिली प्रतिदिन का लागत है। अंत में वह कर्मचारियों की स्वास्थ्य सुविधाएं हेतु पीपीई किट, दवाइयां, आपात्कालिन प्रोटोकॉल, कुल कर्मचारियों की संख्या तथा उपकरणों इत्यादि के इस्तेमाल से जुड़ी जानकारियां दीं।

सॉफ्ट स्किल्स ट्रेनिंग (समापन)

ऑफ नर्सिंग एण्ड पैरामेडिकल

प्रशिक्षण अनुभव को प्रस्तुत करतीं हुईं छात्राएं

दिनांकः 11 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल के डायलिसिस एवं ऑप्टोमेट्री विभाग में उन्नति फाउंडेशन द्वारा आयोजित सॉफ्ट स्किल्स ट्रेनिंग कार्यक्रम का समापन समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

यह कार्यक्रम प्राचार्य डॉ. रोहित श्रीवास्तव के कुशल निर्देशन और उन्नति फाउंडेशन के मेंटर श्री शिवानन्द त्रिपाठी के नेतृत्व में आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम का संचालन कंचन चौहान एवं दुर्गा गुप्ता ने कियाए जबकि धन्यवाद ज्ञापन क्रमशः निधि (ऑप्टोमेट्री विभाग) और सोनाली मौर्या (डायलिसिस विभाग) द्वारा दिया गया।

इस अवसर पर छात्रों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल के शिक्षकों ने अपने वक्तव्य में बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों के व्यक्तित्व विकास, संवाद कौशल और आत्मविश्वास को बढ़ाना था।

कार्यक्रम में प्रतिभागियों में मुख्य रूप से समृद्धि, रिद्धि, अंजलि, स्मिता, विशाखा, अर्पिता, नुज़हत, निधि, प्रियंका, नैनाख खुशबू, स्वाति, अवधेशानंद, अखिलेश और अमन ने विभिन्न कलाओं का मनमोहक प्रदर्शन किया।

इसी क्रम में समृद्धि, अभिनव, अंजलि, स्मिता, नुज़हत, अर्पिता, रिद्धि, शुभम, नूर आलम एवं मनदीप ने अपने अनुभव साझा किए, जो अत्यंत प्रेरणादायक रहे।

इस विभाग के कार्यक्रम में, सोनाली, चाँदनी, सुप्रिया, स्वीकृति, आकाश, सोनिया, प्रियंका, रोहिनी, आँचल सिंह, शिखा, आँचल चौधरी, रूबी यादव, सृष्टी और समा परवीन ने अपनी प्रस्तुतियों से सभी को प्रभावित किया।

अनुभव साझा करने वालों में समा परवीन, दुर्गा गुप्ता, नसरीन बानो, प्रियंका, रोहिनी एवं राघवेन्द्र शामिल रहें।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पैरामेडिकल विभाग के शिक्षक संदीप शर्मा, कुंवर अभिनव सिंह राठौर, विशालदीप, संजीव विश्वकर्मा, जय शंकर पाण्डेय, धीरज कुमार, आकांक्षा दीक्षित, अंकिता दीक्षित, आकाश वर्मा, अर्पणा प्रजापति, माधुरी चौरसिया, खुशी चौधरी, आदर्श मिश्रा, ज्योति गुप्ता, सुप्रिया गुप्ता, शुभम कुमार मौर्या एवं अनूप कुमार मिश्रा, आयुषी राज उपस्थित रहें।

समापन समारोह में पैरामेडिकल विभाग के समस्त छात्र–छात्राएं उपस्थित रहें।

एकदिवसीय विशेष शिविर

कृषि संकाय

स्वच्छ ग्राम स्वच्छ समाज का संदेश देते हुए स्वयंसेवक

दिनांकः 12 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना की पारिजात इकाई (कृषि संकाय) द्वारा ग्राम सभा मानीराम–सिकटौर में एकदिवसीय विशेष शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ग्रामवासियों में उत्साह एवं जागरूकता देखने को मिली। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. आयुष कुमार पाठक के मार्गदर्शन में स्वयंसेवकों ने सेवाए समर्पण और समाज सुधार का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

शिविर के दौरान स्वयंसेवकों ने पूरे गाँव में स्वच्छता जागरूकता रैली निकाली और लोगों को 'स्वच्छ गाँव–स्वस्थ समाज' का संदेश दिया। स्वयंसेवकों ने घर.घर जाकर नशामुक्ति अभियान के तहत ग्रामीणों को व्यसन से दूर रहने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। स्वयंसेवकों द्वारा बनाए गए विभिन्न जागरूकता अभियान के पोस्टरों और जनसंवाद ने वातावरण को सामाजिक चेतना से भर दिया।

मिशन शक्ति अभियान 5.0 के अंतर्गत पारिजात इकाई की महिला स्वयंसेविकाओं ने महिलाओं एवं किशोरियों के बीच नारी सुरक्षाए नारी सम्मान और आत्मनिर्भरता पर प्रेरणादायक संवाद किया। उन्होंने उपस्थित महिलाओं को 1090, 181, 112, 108, 1076 जैसे महत्वपूर्ण हेल्पलाइन नंबरों की जानकारी दी और उन्हें किसी भी आपात स्थिति में निडर होकर इनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। अपने उद्बोधन में कार्यक्रम अधिकारी डॉ. आयुष कुमार पाठक ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज निर्माण की एक जीवंत प्रक्रिया है।

इस तरह के जनजागरूकता शिविर ग्रामीण समाज में नई चेतना, नई सोच और नई ऊर्जा का संचार करते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि एनएसएस के स्वयंसेवक ही सच्चे अर्थों में 'सेवा परमो धर्मः' के भाव को धरातल पर उतारते हैं।

ग्रामवासियों ने पारिजात इकाई के स्वयंसेवकों के इस सराहनीय प्रयास की प्रशंसा की और कहा कि इस तरह के आयोजन गाँव के सामाजिक और मानसिक विकास में अत्यंत उपयोगी हैं।

कार्यक्रम में शुभम आनंद, अक्षय पांडे, अखिलेश चौरसिया, स्नेहा गुप्ता, तेजस राज, नेहा सिंह, नेहा कुमारी, अपराजिता पासवान सहित सभी स्वयंसेवकों की सक्रिय भागीदारी, अनुशासन एवं जनसेवा की भावना ने शिविर को एक सफल एवं प्रेरणादायक आयोजन बना दिया।

शैक्षणिक भ्रमण

पैरामेडिकल संकाय

मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत महिला सुरक्षा के प्रति जागरूक करते हुए स्वयंसेविकाएं

दिनांकः 12 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में संचालित माता अनुसुईया इकाई द्वारा ग्राम दुर्गापुर में प्रथम एकदिवसीय शिविर आयोजित किया गया।

इस शिविर का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक जागरूकता फैलानाए महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना तथा मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत जन जागरूकता को सुदृढ़ बनाना था।

शिविर में इकाई के कुल 100 स्वयंसेवकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी स्वयंसेवकों को पाँच समूहों में विभाजित कर विभिन्न विषयों पर जनजागरूकता गतिविधियों का संचालन किया गया। प्रत्येक समूह ने अपने.अपने विषय पर रचनात्मक और प्रेरणादायक तरीके से ग्रामवासियों को जागरूक किया गया।

प्रथम समूह, जिसका नेतृत्व अनामिका निषाद और अंबालिका प्रजापति द्वारा किया गया जिसमें मिशन शक्ति अभियान 5.0 के तहत एक जागरूकता रैली निकाली।

इस रैली के माध्यम से ग्रामवासियों को महिला सुरक्षाए स्वावलंबन और अधिकारों के प्रति सचेत किया गया। स्वयंसेवकों ने नारे और बैनरों के जरिए समाज में महिलाओं की भूमिका और सुरक्षा के महत्व पर संदेश दिया।

द्वितीय समूह, गुडिया सिंह और नेहा निषाद के नेतृत्व मेंए पोस्टर प्रस्तुति के माध्यम से मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत महिला सुरक्षा और जनजागरूकता पर कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

उन्होंने आकर्षक पोस्टरों के माध्यम से बताया कि महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान समाज की प्रगति की आधारशिला है।.

तृतीय समूह, जिसका नेतृत्व रागिनी मेनका और निधि यादव ने किया, शासन द्वारा जारी महिला सहायता एवं आपातकालीन हेल्पलाइन नंबरों : 112, 1090, 181, 102, 108 और 1076 कृ के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ये नंबर संकट की स्थिति में तत्काल सहायता प्राप्त करने के लिए अत्यंत उपयोगी हैं और प्रत्येक नागरिक को इनका ज्ञान होना चाहिए ताकि किसी भी आपात स्थिति में तुरंत मदद ली जा सके।

चतुर्थ समूह, शम्मी और रुबी विश्वकर्मा के नेतृत्व में, साइबर अपराध और साइबर सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक किया।

उन्होंने पोस्टर प्रस्तुति के माध्यम से बताया कि आज के डिजिटल युग में साइबर ठगी, धोखाधड़ी और फर्जीवाड़े से बचने के लिए सावधानी अत्यंत आवश्यक है। साथ ही यह भी समझाया कि अनजान लिंक, कॉल या मैसेज पर अपनी व्यक्तिगत

जानकारी साझा न करें।

पंचम समूह, स्वेता शुक्ला और शालिनी गुप्ता के नेतृत्व मेंए नुक्कड़ नाटक के माध्यम से महिला सशक्तिकरण और दहेज प्रथा के विषय पर प्रभावशाली प्रस्तुति दी। उन्होंने नारों और संवादों के माध्यम से यह संदेश दिया कि समाज में एकताए भाईचारा और सहयोग ही एक मजबूत राष्ट्र की नींव हैं।

ग्राम प्रधान श्री सर्वेश यादव ने स्वयंसेवकों के इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे शिविर ग्रामीण समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में अत्यंत सहायक होते हैं।

उन्होंने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय सेवा योजना की टीम को धन्यवाद देते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजन निरंतर जारी रखने की अपेक्षा व्यक्त की।

कार्यक्रम अधिकारी सुमन यादव ने बताया कि, ग्राम दुर्गापुर में आयोजित यह प्रथम एकदिवसीय शिविर न केवल जनजागरूकता का प्रभावी माध्यम बनाए बल्कि स्वयंसेवकों के लिए सीखनेए नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने का एक उत्कृष्ट अवसर भी सिद्ध हुआ।

कार्यक्रम माता अनुसुईया इकाई की कार्यक्रम अधिकारी एवं विश्वविद्यालय मिशन शक्ति की नोडल अधिकारी सुश्री सुमन यादव के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। उनके निर्देशन में स्वयंसेवकों ने अनुशासन, समर्पण और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का परिचय दिया।

मिशन शक्ति 5.0

नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय

दिनांकः 13 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालयए गोरखपुर के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय द्वारा मिशन शक्ति 5.0 के तहत जीएनएम प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिए नगर भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत छात्राओं ने गीडा औद्योगिक क्षेत्र स्थित पारले.जी बिस्किट फैक्ट्री का शैक्षिणिक एवं औद्योगिक भ्रमण किया।

इस भ्रमण का उद्देश्य छात्राओं को औद्योगिक कार्यप्रणालीए उत्पादन प्रक्रिया तथा प्रबंधन प्रणाली के बारे में व्यवहारिक अनुभव प्रदान करना था। भ्रमण के दौरान छात्राओं ने बिस्किट निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया – कच्चे माल की तैयारी, मिश्रण, बेकिंग, पैकेजिंग और गुणवत्ता नियंत्रण के विभिन्न चरणा– को निकट से देखा और समझा।

फैक्ट्री के तकनीकी विशेषज्ञों ने छात्राओं को स्वच्छता मानकोंए मशीनों के संचालन एवं उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखने के उपायों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रश्न पूछे और औद्योगिक कार्यसंस्कृति के विविध पहलुओं को समझा।

भ्रमण के दौरान छात्राओं ने फैक्ट्री में कार्यरत महिला श्रमिकों को मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत शासन द्वारा जारी महिला सुरक्षा एवं सहायता हेल्पलाइन नंबरों – 1090 (वुमन पावर लाइन), 1076 (मुख्यमंत्री हेल्पलाइन), 181 (महिला हेल्पलाइन), 112 (आपातकालीन सेवा), 1098 (बाल सहायता हेल्पलाइन), 102 (स्वास्थ्य सेवा), 101 (फायर सर्विस) एवं 108 (एम्बुलेंस सेवा) की जानकारी भी प्रदान की।

उन्होंने बताया कि किसी भी आपात स्थिति या समस्या के समय इन नंबरों के माध्यम से शासन की तत्काल सहायता प्राप्त की जा सकती है।

यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की मिशन शक्ति 5.0 नोडल अधिकारी सुश्री सुमन यादव के नेतृत्व में तथा सुश्री प्रिया सिंह एवं सुश्री प्रज्ञा मिश्रा के सहयोग से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

प्राचार्य डॉ. डी. एस. अजिथा ने इस अवसर पर कहा कि श्ऐसे औद्योगिक भ्रमण छात्राओं के लिए अत्यंत उपयोगी होते हैंए क्योंकि ये उन्हें न केवल व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते है, बल्कि उनके आत्मविश्वास, टीम वर्क और नेतृत्व क्षमता का भी विकास करते हैं।

मिशन शक्ति जैसे अभियान छात्राओं को समाज में सशक्त भूमिका निभाने हेतु प्रेरित करते हैं। 'संकाय सदस्यों ने छात्राओं की सक्रिय भागीदारी की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे औद्योगिक भ्रमण न केवल शैक्षणिक दृष्टि से लाभकारी हैं बल्कि छात्राओं में आत्मनिर्भरता, जागरूकता और सामाजिक संवेदनशीलता की भावना को भी सशक्त करते हैं।

शैक्षणिक भ्रमण 5.0

नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय

व्यावसायिक क्षेत्र पर शैक्षणिक भ्रमण करतीं नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 13 अक्टूबर, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिक, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित नर्सिंग विभाग के जीएनएम प्रथम वर्ष की 100 छात्राओं ने गीडा औद्योगिक क्षेत्र स्थित पारले–जी बिस्किट फैक्ट्री का शैक्षणिक एवं औद्योगिक भ्रमण अपने दो शिक्षिकाओ ;मिस प्रिया सिंह, मिस प्रज्ञा मिश्राद्ध के मार्गदर्शन में किया।

इस भ्रमण का उद्देश्य छात्राओं को औद्योगिक कार्यप्रणाली, उत्पादन प्रक्रिया तथा प्रबंधन प्रणाली के बारे में व्यवहारिक अनुभव प्रदान करना था। भ्रमण के दौरान छात्राओं ने बिस्किट निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया – कच्चे माल की तैयारीए मिश्रणए बेकिंगए पैकेजिंग और गुणवत्ता नियंत्रण के विभिन्न चरणों – को निकट से देखा और समझा।

फैक्ट्री के तकनीकी

विशेषज्ञों ने छात्राओं को स्वच्छता मानकों, मशीनों के संचालन एवं उत्पाद की गुणवत्ता बनाए रखने के उपायों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रश्न पूछे और औद्योगिक कार्यसंस्कृति के विविध पहलुओं को समझा।

इस औद्योगिक भ्रमण से उन्हें उत्पादन प्रबंधन, टीम वर्क और उद्योग में तकनीकी नवाचारों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ, जिससे उनके सिद्धांतात्मक ज्ञान में भी वृद्धि हुई।

जागरूकता अभियान ▲ ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल

जीवनरक्षक सीपीआर पद्धति की जानकारी प्राप्त करतीं व शपथ ग्रहण करतीं छात्राएं

दिनांकः 14 अक्टूबर, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत नर्सिंग विभाग में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा 13 से 17 अक्टूबर 2025 तक आयोजित राष्ट्रव्यापी कार्डियो.पल्मोनरी रिससिटेशन जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत प्रसारित लाइव वीडियो छात्राओं तथा संकाय सदस्यों को दिखाया गया। इस पहल का मुख्य उद्देश्य आम जनता में हृदयगति रुकने की स्थिति में किए जाने वाले सीपीआर के महत्व, तरीकों और उसकी समय पर की जाने वाली प्रक्रिया के बारे में जागरूकता फैलाना था।

यह अभियान लोगों में आपातकालीन स्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया देने और किसी व्यक्ति का जीवन बचाने की क्षमता विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। वीडियो के माध्यम से छात्राओं ने सीपीआर की प्रक्रिया, उसके विभिन्न चरणों तथा सामान्य व्यक्ति द्वारा इसे करने की विधि के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों में आपातकालीन परिस्थितियों में सही ढंग से प्रतिक्रिया देने की समझ बढ़ी और समाज में जीवनरक्षक तकनीकों के प्रति जागरूकता फैलाने की प्रेरणा मिली। साथ ही विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय सीपीआर शपथ लेकर जीवन रक्षक उपायों को सीखने और समाज में जागरूकता फैलाने का संकल्प लिया। इस आयोजन से छात्राओं में न केवल व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाए बल्कि दूसरों की मदद करने की मानवीय भावना भी मजबूत हुई।

प्रदर्शनी कार्यक्रम ▲ ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल

छात्राओं द्वारा एवी एड्स प्रदर्शनी का आयोजन

दिनांकः 14 अक्टूबर, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के अंतर्गत संचालित नर्सिंग विभाग के जीएनएम तृतीय वर्ष की छात्राओं द्वारा एवी एड्स प्रदर्शनी कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर छात्राओं ने अपनी शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन में विभिन्न विषयों पर प्रदर्शनी प्रस्तुत की। प्रदर्शनी में नैरेटिव चार्ट, फ्लो चार्ट, फ्लिप चार्ट, टेबुलेशन चार्ट, बुलेटिन बोर्ड, फ्लैश कार्ड, मॉडल, पोस्टर, लीफलेट, ब्रोशर, पैम्फलेट, डेमोंस्ट्रेशन, वीडियो रिकॉर्डिंग, रोल प्ले, माइम, नाटक, डिजिटल प्रेजेंटेशन, 3 डी मॉडल, ओएचपी, स्ट्रिंग/ फिंगर/शैडो पपेट जैसे विभिन्न श्रव्य–दृश्य साधनों (एवी) एड्स) का उपयोग किया गया।

छात्राओं ने वृद्ध रोगियों में गिरने की रोकथाम के उपायों का प्रभाव, सीओपीडी, श्सुरक्षित रोगी स्थानांतरण एवं पोजिशनिंग विधि, यक्ष्मा – जागरूकता एवं रोकथाम, स्तनपान तकनीकें, नर्सिंग प्रक्रिया, बायो–मेडिकल वेस्ट मैनेजमेंट, आपदा प्रतिक्रिया एवं ट्रायेज, हृदय रोगों का मूल्यांकन, गर्भावस्था पूर्व मूल्यांकन, शारीरिक परीक्षण एवं स्वास्थ्य मूल्यांकन आदि

विषयों पर आकर्षक एवं शिक्षाप्रद प्रदर्शन प्रस्तुत किए।

इस प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य छात्राओं में शिक्षण कौशल, रचनात्मकता, व्यावहारिक ज्ञान और पेशेवर नर्सिंग दृष्टिकोण का विकास करना था।

इस कार्यक्रम के माध्यम से छात्राओं ने यह सीखा कि नर्सिंग शिक्षा में विभिन्न श्रव्य. दृश्य साधनों का उपयोग कर जटिल विषयों को सरल, प्रभावीए रोचक और यादगार तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है।

छात्राओं ने अपने–अपने विषय से संबंधित जानकारी को विस्तार से समझाया, नैदानिक प्रक्रियाओं और देखभाल के तरीकों को दर्शकों के सामने प्रदर्शित किया और स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव दिए।

प्रदर्शनी के दौरान छात्राओं ने टीम वर्क, समय प्रबंधन, प्रस्तुति कौशल, संवाद क्षमता और आत्मविश्वास का अभ्यास किया। इससे न केवल उनकी शैक्षणिक और व्यावहारिक क्षमताओं में वृद्धि हुई, बल्कि उन्हें अपने भविष्य के पेशेवर जीवन में रोगी शिक्षा और स्वास्थ्य संवर्धन कार्यों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करने की प्रेरणा भी मिली।

यह कार्यक्रम नर्सिंग शिक्षा में एवी एड्स की महत्ता, रचनात्मक दृष्टिकोण और व्यावहारिक अनुभव को उजागर करने में सफल रहा।

ऑनलाइन अतिथि व्याख्यान ऑफ नर्सिंग एवं पैरामेडिकल

साइबर क्राइम की विस्तृत जानकारी देते हुए श्री अतुल चौबे

दिनांकः 14 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालयए गोरखपुर में संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के महंत अवेद्यनाथ इकाई द्वारा मिशन शक्ति 5.0 के तहत आज दिनाक 14 अक्टूबर 2025 को साइबर सुरक्षा, डिजिटल अरेस्ट, डिजिटल फ्राड पर ऑनलाइन अतिथि व्याख्यान किया गया।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत छात्रों मे आज के समय मे हो रहे साइबर क्राइम डिजिटल अरेस्ट और डिजिटल फ्राड को लेकर जगरूकता लाना अथवा अगर इस प्रकार की कोई भी गटना हो तो बिना घबड़ाये उसे कैसे ठीक करें।

इस कार्यक्रम मे अतिथि व्याख्यान हेतु श्री अतुल चौबे जी चीफ कांस्टेबल साइबर क्राइम सेल द्वारा साइबर क्राइम जो की फोन या कंप्यूटर से किया जाता हैं की विस्तृत जानकारी दी गई श्री चौबे जी ने बताया की जिसका मुख्य उद्देश्य पैसे की मांग होती है, आज के समय मे डिजिटल अरेस्ट जो की लोगो मे एक धारणा बनी हुई इस कार्यक्रम मे बताया गया कि डिजिटल अरेस्ट जैसा कोई भी अरेस्ट आनलाइन नही किया जाता।

अगर आप को कोई काल पुलिस या किसी भी फेक प्रोफाइल से आ रहा हो तो आप उसे कैसे पहचाने और क्या प्रतिक्रिया दिखाये जिससे आप को कोई भी हानि ना हो, आज के समय मे कई प्रकार के फ्राड किये जा रहे है जिसमें फेक बैलेंस क्रेडिट मैसेजए सोशल मीडिया हर्रासमेंट, फेक आईडी फ्राड लोन अप्लिकेशंन, वर्क फ्रॉम होम, कस्टमर काल, फेक वेबसाइट, यूपीआई रिकवेस्ट फ्राड, आंनलाइन खरीदारी और किसी भी प्रकार की आनलाइन काल या नोटिस आपके फोन पर सरकार के तरफ से नही भेजा जाता। कार्यक्रम मे बताया गया की आप किसी भी प्रकार का ऐसा ऐप डाउनलोड ना करे और कोई भी ऐसे लिंक पर बिना संपूर्ण जानकारी के क्लिक ना करें। इस कार्यक्रम के दौरान शासन द्वारा जारी साइबर सुरक्षा एवं सहायता हेल्पलाइन नंबरों – 1930 (साइबर क्राइम हेल्प लाइन), और cybercrime.gov.in की जानकारी भी प्रदान की।

उन्होंने बताया कि किसी भी आपात स्थिति या समस्या के समय इन नंबरों के माध्यम से शासन की तत्काल सहायता प्राप्त की जा सकती है। यह कार्यक्रम महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में संचालित फैलल्टी ऑफ नर्सिंग एवं पैरामेडिकल की अधिष्ठाता डॉ. डी.एस. अजिथा और प्रधानाचार्या डॉ.रोहित कुमार श्रीवास्तव के नेतृत्व मे कराया गया।

इस अवसर प्रधानाचार्या डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव जी ने अतिथि का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए छात्रों मे ऐसे जरूरी इंफोर्मेशन साझा किया जिससे किसी भी तरह के फ्राड से बचा जा सकता है।

विश्व एनाटॉमी दिवस

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर

एमबीबीएस के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. अनुराग श्रीवास्तव

दिनांकः 15 अक्टूबर, 2025 को विश्व एनाटॉमी दिवस की पूर्व संध्या पर श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज, अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र, गोरखपुर गुरु गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर से सम्बद्ध के एनाटॉमी विभाग द्वारा एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का विषय था 'शव का सम्मान और शव पहले शिक्षक के रूप में।'

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने की। इस अवसर पर सभी संकाय सदस्य एवं एमबीबीएस 2025 बैच के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. वर्षा मोखासी, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, एनाटॉमी विभाग के मार्गदर्शन में किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. शशि भूषण पांडे, एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. पूनम श्रीवास्तव, असिस्टेंट प्रोफेसर तथा डॉ. आशीष एवं डॉ. गौरव, ट्यूटर, एनाटॉमी विभाग सहित समस्त संकाय सदस्य उपस्थित रहें।

कार्यक्रम की शुरुआत में प्रासंगिक वीडियो प्रदर्शित किए गएए जिनके माध्यम से शरीर दान एवं अंग दान के महत्व पर जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया गया। इसके पश्चात विद्यार्थियों द्वारा कैडेवरिक शपथ (Cadaveric Oath) ली गई।

प्राचार्य महोदय ने अपने प्रेरक संबोधन में शरीर दान के महत्व तथा एनाटॉमी के अध्ययन में शव को 'पहले शिक्षक' के रूप में सम्मान देने की भावना पर बल दिया।डॉ. पूनम श्रीवास्तव, असिस्टेंट प्रोफेसर, एनाटॉमी विभाग ने सभी अतिथियों एवं विद्यार्थियों का स्वागत किया। डॉ. शशि भूषण पांडे, एसोसिएट प्रोफेसरए एनाटॉमी विभाग ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का समापन विद्यार्थियों की सकारात्मक प्रतिक्रिया एवं भावनात्मक अनुभवों के साथ हुआ। सभी ने इस आयोजन की सराहना की।

अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आरोग्य संगम-2025

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

एकीकृत चिकित्सा की महत्ता पर व्याख्यान देतीं मुख्य अतिथि डॉ. रजनी ए नायर

दिनांकः 16 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में आज तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आरोग्य संगम–2025: एकीकृत चिकित्सा की दिशा में भव्य उद्घाटन किया गया।

मुख्य अतिथि डॉ. रजनी ए. नायर (प्रेसिडेंट बीईरीएसएम .एन सी आई एस एम) ने एकीकृत चिकित्सा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह चिकित्सा पद्धति पारंपरिक और आधुनिक उपचार प्रणालियों के समन्वय से रोगों की रोकथाम, उपचार एवं समग्र स्वास्थ्य संवर्धन का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने कहा कि इंटीग्रेटिव मेडिसिन का भविष्य उज्ज्वल है, क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वास्थ्य देखभाल को अधिक समग्र, सुरक्षित और प्रभावी बनाने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने एनसीआईएसएम (राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग) के दृष्टि और लक्ष्य की जानकारी देते हुए कहा कि आयोग का उद्देश्य पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाना तथा वैद्यकीय शिक्षा में गुणवत्ता और पारदर्शिता सुनिश्चित करना है।

उन्होंने आयुर्वेदिक चिकित्सकों के अधिकारों, उनके व्यावसायिक दायित्वों और वैश्विक स्तर पर आयुर्वेद की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

डॉ. रजनी ने कहा कि एनसीआईएसएम भारतीय चिकित्सा प्रणाली के सशक्तिकरण की दिशा में एक मील का पत्थर है, जो आयुर्वेद को विश्व स्वास्थ्य प्रणाली में सशक्त स्थान दिलाने के लिए कार्यरत है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए माननीय कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने कहा कि

आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐसा अमूल्य अंग हैए जो विज्ञानए दर्शन और जीवन पद्धति तीनों को एक सूत्र में पिरोता है। एकीकृत चिकित्सा की दिशा में यह सेमिनार भारत के नेतृत्व की नई भूमिका को सशक्त करेगा।

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डॉ. गिरीधर वेदांतम ने कहा कि आयुर्वेद केवल उपचार की पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है। आरोग्य संगम 2025 पारंपरिक चिकित्सा और आधुनिक विज्ञान के समन्वय का एक प्रेरक मंच है।

कार्यक्रम में आरोग्य संगम सेमिनार की स्मारिका तथा भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) केंद्र एवं वेबसाइट का उद्घाटन विशेष आकर्षण रहा।

स्पार्क एवं हैकथन रिसर्च वर्क के लिए ईश्वर चंद्र गुप्ता, राम गोपाल तिवारी, सुरभि द्विवेदी, अंकिता सहानी ए नितेश दुबे को सम्मानित किया गया।

डॉ. शांति भूषण विभागाध्यक्ष संहिता सिद्धांत के पुस्तक आयुर्वेदा टू प्वाइंट जीरो का सम्मानित अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह एवं मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. रजनी ए. नायर (प्रेसिडेंट बीईरीएसएम एन सी आई एस एम), डॉ. सुबर्णा रॉय) निदेशक और आए सीएमइसआर, डॉ. पवन गोडटवार टीओहू सिरो, डॉ. अरविंद चोपड़ा (एमडी निदेशक और मुख्य रूमेटोलॉजिस्ट),डॉ. संजय पोखरेल (प्रोफेसर काय चिकित्सा पतंजलि आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज और अनुसंधान केंद्र नेपाल) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया।

विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना एवं धन्वंतरी वंदना ने कार्यक्रम को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की।

कार्यक्रम के अंत में उप प्राचार्य डॉ. सुमित कुमार ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों और आयोजन समिति के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

यह अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 16 से 18 अक्टूबर 2025 तक चलेगाए जिसमें भारत सहित पांच देशों सहित भारत के बारह राज्यों से प्रतिष्ठित विशेषज्ञ, चिकित्सकए एकीकृत चिकित्सा की संभावनाओं, शोध दिशा और वैश्विक योगदान पर अपने विचार साझा करेंगे।

कार्यक्रम में डॉ. संजय महेश्वरी (डायरेक्टर ऑफ बिरला ग्रुप आफ हॉस्पिटल्स), डॉ. जी. एस. तोमर प्रेसिडेंट विश्वा आयुर्वेद परिषदएडॉ एलेक्स हैंकी प्रोफेसर एमेरिटस ऑफ योगा यूनाइटेड किंगडम, डॉ. अशोक वाष्णेय राष्ट्रीय आयोजन सचिव आरोग्य भारती सहित विश्वविद्यालय व आयुर्वेद कॉलेज के डीन, चिकित्सक, प्राध्यापक और देश विदेश से प्रतिभागी शोधार्थी उपस्थित रहें।

अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आरोग्य संगम 2025

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीटयूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

वैज्ञानिकी सत्र में अपने शोधपत्र प्रस्तुतकरते डॉ. संजय पोखरेल व डॉ. सुबरना राय

दिनांकः 16 अक्टूबर, 2025 को गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज आयुर्वेद, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में आज अंतरराष्ट्रीय सेमीनार आयुर्वेद संगम–2025 के अंतर्गत विभिन्न विषयों पर वैज्ञानिकी सत्र का आयोजन कराया गया।

प्रथम सत्र के आयोजन में मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. संजय पोखरेल प्राध्यापक काय. चिकित्सा नेपालने चिकित्सा पर्यटन और समग्र कल्याण का दायरा विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों को स्पष्ट करते हुए कहा कि होलिस्टिक वेलबीइंग एक समग्र दृष्टिकोण है, जिसमें शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य के संतुलन पर बल दिया जाता है।

आयुर्वेद के अनुसार जब शरीर, मन और आत्मा में संतुलन होता है, तभी वास्तविक स्वास्थ्य और सुख की प्राप्ति होती है। उन्होंने बताया कि आहार–विहार, योग–प्राणायाम, ध्यान और पंचकर्म आयुर्वेद में समग्र स्वास्थ्य के प्रमुख अंग हैं। आने वाले समय में यह क्षेत्र रोजगार के नए अवसरों का भी आधार बनेगा।

व्याख्यान के उपरांत चेयरपर्सन डॉ. अशोक वाष्णेय ने उन्हें प्रमाणपत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।

द्वितीय सत्रः डॉ. रजनी, नायर ने इंटीग्रेटिव मेडिसिन के महत्व को बताते हुए कहा यह एक ऐसी पद्धति है जो पारंपरिक और वैकल्पिक चिकित्सा को मिलाकर रोगों

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (आरोग्य संगम) में मंचासिन डॉ. संजय पोखरेल, डॉ. अशोक वार्ष्णेय व डॉ. रजनी ए नायर

के उपचार और व्यक्तिगत देखभाल, बीमारी की रोकथाम, बेहतर स्वास्थ्य परिणाम , मानसिक स्वास्थ्य में सुधार के बारे में बताया। इंटीग्रेटिव मेडिसिन का भविष्य उज्ज्वल है, क्योंकि यह पारंपरिक और वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को मिलाकर स्वास्थ्य देखभाल को अधिक समग्र और प्रभावी बनाने का प्रयास करती है।

तृतीय सत्रः मुख्य वक्ता डॉ. सुबर्णा रॉय (निदेशक एवं वैज्ञानिक, आईसीएमआर, राष्ट्रीय पारंपरिक चिकित्सा संस्थान) ने 'स्ट्रैटेजिक फ्रेमवर्क एवं स्कोप ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन' विषय पर अपना विचार प्रस्तुत किया। डॉ. राय ने सर्वप्रथम इंटीग्रेटिव हेल्थ की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए इसके महत्व एवं लाभों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि यह स्वास्थ्य पद्धति व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक स्वास्थ्य के समग्र विकास पर केंद्रित होती है।

इसके पश्चात उन्होंने वैकल्पिक, पूरक तथा समेकित चिकित्सा प्रणालियों के मध्य के अंतर को सरल एवं स्पष्ट रूप में समझाया।

डॉ. रॉय ने इंटीग्रेटिव हेल्थ के कंपोनेंट के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया और यह उल्लेख किया कि इस क्षेत्र में अनुसंधान अत्यंत आवश्यक है, किन्तु वर्तमान समय में यह प्रक्रिया धीमी गति से प्रगति कर रही है। उन्होंने प्रतिभागियों को इस दिशा में अधिक शोधए नवाचार और जनजागरूकता बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

चतुर्थ सत्रः डॉ. रिनझिन द्वारा मुख्य वक्ता का परिचय एवं स्वागत किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. रमेश श्रीवास्तव सीनियर प्रिंसिपल साइंटिस्ट सी एस आई आर, सी आई एम, डी, लखनऊ ने विषय 'आयुर्वेद एवं मानव कल्याण में औषधीय एवं सुगंधित पौधों के सतत उपयोग' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

उन्होंने अपने वक्तव्य में बताया कि किसानों तथा हर्बल एवं एरोमैटिक उद्योगों के लिए औषधीय एवं सुगंधित पौधों की उन्नत किस्मों का विकास किया जा रहा है।

उन्होंने यह भी बताया कि अनुसंधान केंद्र में विभिन्न औषधीय एवं सुगंधित पौधों की नई किस्मों का विकास किया गया है, जिनकी गुणवत्ता एवं उत्पादन क्षमता अधिक है। इन विकसित किस्मों को किसानों तक पहुँचाने और उनके व्यावहारिक उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न माध्यमों से प्रसारित किया जा रहा है। वक्ता ने अपने उद्बोधन में इस बात पर विशेष बल दिया कि इन पौधों का सतत एवं वैज्ञानिक उपयोग न केवल मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सशक्तिकरण में भी सहायक है। कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. मनोरंजन शाहू फॉर्मर डीन, आयुर्वेद फैकल्टी, भीएचयू फाउंडर, डायरेक्टर ऑफ ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद।

पंचम सत्रः सेमिनार में वक्ता श्री किशोर रामकृष्णन प्रोफेसर एंड हेड, डिपार्टमेंट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिनए नीमहंस बैंगलोर इंटीग्रेटिव न्यूरोसाइकीट्रीश् विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। वक्ता ने पहले सिज़ोफ्रेनिया और इसके लक्षणों के बारे में बताया। उन्होंने डिप्रेशन और उसके आयुर्वेदिक उपचार पर प्रकाश डाला। साथ ही विभिन्न मेटाबोलिक डिसऑर्डर्स और उनके आयुर्वेदिक इलाज के बारे में जानकारी दी।त्रिफला और ब्राह्मी के न्यूरोलॉजिकल विकारों में विभिन्न उपयोगों और लाभों के बारे में भी विस्तार से बताया। अंत में उन्होंने प्रतिभागियों को आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से मानसिक और न्यूरोलॉजिकल स्वास्थ्य के महत्व और इस क्षेत्र में अनुसंधान की आवश्यकता के प्रति जागरूक किया।

कार्यक्रम में डॉ. संजय महेश्वरी डायरेक्टर ऑफ बिरला ग्रुप आफ हॉस्पिटल्स, डॉ. जी. एस. तोमर प्रेसिडेंट विश्वा आयुर्वेद परिषद, डॉ. एलेक्स हैंकी प्रोफेसर एमेरिटस ऑफ योगा यूनाइटेड किंगडम, डॉ. अशोक वाष्णेय राष्ट्रीय आयोजन सचिव आरोग्य भारती द्ध सहित आयुर्वेद के चिकित्सक ए प्राध्यापक और देश विदेश से प्रतिभागी शोधार्थी उपस्थित रहे।

विश्व एनेस्थीसिया दिवस

नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय

एनेस्थीसिया विषय की महत्ता पर व्याख्यान देते हुए डॉ. राजेश कुमार

दिनांकः 16 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर में संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के महंत अवेद्यनाथ इकाई द्वारा आज दिनाकं 16 अक्टूबर 2025 को विश्व एन्थेसिया दिवस मनाया गया।

इस वर्ष 2025 का जो थीम है वह Anesthesiology in Health Emergencies जो की WFSA द्वारा दिया गया है।

इस कार्यक्रम का शुभारम्भ एन्थेसिया कोर्स कर रही छात्रा आयुषी चौबे के द्वारा जिसने इस वर्ष के थीम का उद्देश्य बताते हुए और अतिथि स्वागत एवं औपचारिक संबोधन के साथ किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजेश कुमार पटेल, सीनियर ओटी टेक्नीशियन, हेरिटेज इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, वाराणसी उपस्थित रहें। उन्होंने एनेस्थीसिया विज्ञान के महत्व, इतिहास और आधुनिक चिकित्सा में इसके योगदान पर प्रकाश डाला। श्री पटेल जी ने बताया की हम प्रतेक वर्ष विश्व एन्थेसिया दिवस क्यो मनाते है और इसका उद्येश्य क्या है। यह कार्यक्रम महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में संचालित फैलल्टी ऑफ नर्सिंग एवं पैरामेडिकल् की अधिष्ठाता डॉ. डी. एस. अजिथा और प्रधानाचार्या डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव के नेतृत्व मे कराया गया।

इस अवसर पर धीरज कुमारए कुलदीप यादवए ज्योति गुप्ता सहित सभी गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय प्रशासन ने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं स्वास्थ्यकर्मियों को एनेस्थीसिया विज्ञान की जानकारी प्रदान करना और चिकित्सा क्षेत्र में इसके योगदान को सम्मानित करना है। कार्यक्रम में फैकल्टी सदस्य, विद्यार्थी एवं चिकित्सा कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी दिखाई।

अतिथि व्याख्यान

स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय

बतौर अतिथि अपने अनुभवों को साझा करते हुए पूर्व छात्र श्री राजेश्वर कुमार

दिनांकः 17 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय में ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री एवं माइक्रोबायोलॉजी द्वारा एक प्रेरणादायी अतिथि व्याख्यान एवं पुरातन छात्र संवाद सत्र का आयोजन किया गया।

प्रो. डॉ. सुनील कुमार सिंह, डीन की अध्यक्षता में इस कार्यक्रम में विभाग के पूर्व छात्र श्री राजेश्वर कुमार (एमएससी बायोटेक्नोलॉजी, सत्र 2022–2023) जो वर्तमान में सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ़

फार्मेसी, दिल्ली में कार्यरत हैं, ने शैक्षणिक ज्ञान से उद्योग तक की यात्रा विषय पर विद्यार्थियों के साथ अपने औद्योगिक अनुभवों को साझा किया।

अपने संबोधन में श्री राजेश्वर कुमार ने कहा बायोटेक्नोलॉजी क्षेत्र में उपलब्ध कैरियर अवसरों एवं आवश्यक तकनीकी कौशल के साथ साथ उद्योग में अनुसंधान एवं नवाचार की भूमिका पर विस्तार से वर्तमान छात्र–छात्राओं से संवाद स्थापित किया। जिसमें विद्यार्थियों को सतत अधिगम एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया।

इस सत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री एवं माइक्रोबायोलॉजी उद्योग में व्यावसायिक अवसरों, कार्यसंस्कृति, कौशल विकास तथा कैरियर संभावनाओं से परिचित कराना मुख्य उद्देश्य रहा।

इस अवसर पर डॉ. अमित कुमार दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. रश्मी शाही, डॉ. अवेद्य नाथ सिंह, श्री धनेजय पांडे, सहित संकाय के विद्यार्थिगण उपस्थित रहें।

अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार : 'आरोग्य संगम–2025' गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

वैज्ञानिकी सत्र में अपने शोध प्रस्तुत करते हुए डॉ. राजेन्द्र जैन व डॉ. मनोरंजन शाहू

दिनांकः 17 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में आज तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आरोग्य संगम–2025 का द्वितीय दिवस देर शाम तक विभिन्न विषयों पर वैज्ञानिकी शोध सत्रों का आयोजन हुआ जिसमें देश. विदेश से आए चिकित्सक विद्वानों , गणमान्य अतिथियों ने अपने शोध कार्यों के उद्धरण के साथ अपने विचार एकीकृत चिकित्सा पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

आज के प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि डॉ. राजेंद्र जैन (स्वर विज्ञान एवं वास्तु विशेषज्ञ) ने अपने वक्तव्य में स्वर विज्ञान पे चर्चा करते हुए बताया की स्वर विज्ञान एक प्राचीन भारतीय विज्ञान है जो ध्वनि और उसके प्रभावों का अध्ययन करता है। यह विज्ञान वेदों और उपनिषदों में वर्णित है और इसका उपयोग संगीत, योग और अध्यात्म में किया जाता है। स्वर विज्ञान में ध्वनि के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है, जिसका आधार प्रति पल लिए और छोड़ें जाने वाले श्वास व प्रश्वास है जो व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास एमानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रदान करता है। बिना वास के जीवन की कल्पना नहीं है।

उन्होंने ये भी बताया कि स्वर परिवर्तन के बाद शरीर में विभिन्न रासायनिक परिवर्तन होते हैं, जो शरीर के कार्यों को प्रभावित करते हैं। नाड़ियों का संतुलन शरीर के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालता है, तथा स्वर के सही उपयोग से इन प्रणालियों में सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है।

द्वितीय सत्रः मुख्य अतिथि डॉ. अनिरुद्ध जोशी फाउंडर एंड सीईओ आत्रेय इनोवेशंस नाड़ी तरंगिनि विषय टेक्नोलॉजी इन डायग्नोसिस विथ नाड़ी तरंगिनि पर अपना व्याख्यान देते हुए कहा कि नाडी तरंगिनी एक एडवांस्ड एआई–पावर्ड पल्स डायग्नोस्टिक डिवाइस हैए जो आयुर्वेदिक पद्धति को आधुनिक तकनीक के साथ मिलाकर रोगों का पता लगाने में मदद करती है। यह डिवाइस आयुर्वेदिक पैरामीटर्स का विश्लेषण करते है।

नाडी तरंगिनी एआई–पावर्ड तकनीक, यह डिवाइस अल्ट्रा–सेन्सिटिव सेंसर और एडवांस्ड एल्गोरिदम का उपयोग करके पल्स की जांच करती है और स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्रदान करती है।

यह डिवाइस आयुर्वेदिक पैरामीटर्स वात, पित्त और कफ की जांच करके स्वास्थ्य के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। नाड़ी तरंगिनी आयुर्वेदिक चिकित्सकों को सटीक और डेटा–आधारित निर्णय लेने में मदद कर सकती है।

यह डिवाइस व्यक्तियों को उनके स्वास्थ्य के बारे में जागरूक कर सकती है और उन्हें स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित कर सकती है। इस यंत्र का उपयोग विभिन्न देशों में उपयोग किया जा सकता है, जिससे आयुर्वेदिक चिकित्सा को वैश्विक स्तर पर पहुंचाने में मदद मिल सकती है।

तृतीय सत्र : मुख्य वक्ता डॉ. अरविंद चोपड़ा एमडी निदेशक और मुख्य रुमेटोलॉजिस्ट ने इंटीग्रेटिव मेडिसिन क्लिनिकल बेस्ड एप्रोच के विषय में बताते हुए

वैज्ञानिकी सत्र में अपने शोध प्रस्तुत करते हुए डॉ. अनुराग श्रीवास्तव एवं डॉ. अरविन्द चोपड़ा

कहा एकीकृत चिकित्सा एक ऐसी पद्धति है जो आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को मिलाकर रोगों के इलाज के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है। इस पद्धति मेंए चिकित्सक रोगी के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उपचार के लिए विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों का संयोजन करते हैं।

यह चिकित्सा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें रोगों के इलाज के लिए आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों एदवाओं के साथ–साथ आयुर्वेद, योग, ध्यान और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को भी इसमें शामिल किया जाता है, जो रोगी के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करती हैं। यह पद्धति रोगी के व्यक्तिगत आवश्यकताओं और स्वास्थ्य लक्ष्यों के अनुसार उपचार योजना तैयार करते है।ये न केवल रोगों के इलाज में मदद करती है, बल्कि उन्हें रोकने और प्रबंधित करने में भी मदद करती है। कैंसर के इलाज में एकीकृत चिकित्सा कैंसर के इलाज में मदद कर सकती है, जैसे कि कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी के साथ–साथ आयुर्वेदिक दवाओं और योग का संयोजन। जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों जैसे कि मधुमेह और हृदय रोग के इलाज में मदद कर सकती है, जिसमें आहार, व्यायाम और तनाव प्रबंधन का संयोजन होता है।

अध्यक्षीय भाषण डॉ. जी एस तोमर (प्रेसिडेंट विश्वा आयुर्वेद मिशन) ने दिया स्वागत और प्रास्ताविक भाषण को–चेयर पर्सन डॉ. शांति भूषण (विभागाध्यक्ष संहिता सिद्धांत) ने दिया।

चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. पवन कोडतवार (टेक्निकल ऑफिसर, वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन डब्ल्यू एच ओ एस ई ए र ओए डीन रिसर्च) विषय 'समग्र चिकित्सा का वैश्विक परिदृश्य' पर व्याख्यान देते हुए कहा कि पारंपरिक चिकित्सा के वैश्विक पाठ एवं उसके प्रभाव के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने समझाया कि पारंपरिक एवं समग्र चिकित्सा पद्धतियाँ आज विश्वभर में लोगों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं। इन पद्धतियों के माध्यम से रोगों की जड़ों तक उपचार संभव हो रहा है, साथ ही यह आधुनिक चिकित्सा का भी पूरक बनती जा रही है।

डॉ. पवन ने कहा कि एकीकृत चिकित्सा माध्यम से उपचार से रोगी स्वस्थ हो रहे हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करती हैं। गरीब वर्गों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी और असमानता, बीमारियों की प्रमुख वजह बनती है। अंत में उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन की परिभाषा प्रस्तुत की जो आयुर्वेद के समान है।

स्वास्थ्य केवल रोग या दुर्बलता का अभाव नहीं है, बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक कल्याण की पूर्ण अवस्था है। 'इस प्रकार, समग्र चिकित्सा का वैश्विक परिदृश्य यह दर्शाता है कि स्वास्थ्य केवल उपचार का नहीं, बल्कि संपूर्ण कल्याण का विषय है। उन्होंने यह भी जोर देकर कहा कि प्रत्येक चिकित्सक को अपने सभी उपचार समीक्षाओं को सरकारी पोर्टल पर अपलोड करना चाहिए।

पंचम सत्र : डॉ. मनोरंजन साहू ने 'शल्य चिकित्सा में समग्र दृष्टिकोण' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने वाराणसी में प्राचीन शल्य चिकित्सा की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद में विभिन्न प्रकार के व्रण (घाव) एवं उनके उपचार का विस्तृत वर्णन मिलता है, जो किसी भी शल्य प्रक्रिया की मूलभूत आवश्यकता है।

उन्होंने विभिन्न औषधियों का उल्लेख किया जैसे व्रण शोधन (घाव की शुद्धि हेतु) उदुम्बर, कनेर व्रण रोपण (घाव भरने हेतु) मंजिष्ठा, गुडूची इन औषधियों की क्रिया घाव की शुद्धि, संक्रमण–नियंत्रण एवं त्वरित भराव में सहायक होती है। डॉ. साहू ने बताया कि आयुर्वेदिक औषधियों का आधुनिक शल्य चिकित्सा में समन्वित प्रयोग रोगी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ में सहायक सिद्ध हो सकता है। उन्होंने क्षार सूत्र जो आयुर्वेद की एक अत्यंत प्रभावशाली और वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति है, जिसका उपयोग विशेष रूप से भगन्दर, अर्श (पाइल्स) नाड़ीव्रण, अर्बुद आदि रोगों के उपचार में किया जाता है उसके विषय के बारे में संक्षिप्त में बताया। यह शल्यचिकित्सा की एक विशेष विधि है जो सुश्रुत संहिता में वर्णित है।

पांचवलकल जिस पंचपल्लव कहते हैं (न्यग्रोध, उदुम्बर, अश्वत्थ, प्लक्ष एपरिष) कषाय का प्रयोग घाव को भरने एवं त्वचा रोग में उपयोगी मानी जाती है।

अपने शोध कार्यों के द्वारा

वैज्ञानिकी सत्र में अपने शोध प्रस्तुत करते हुए डॉ. पवन कोडतवार व डॉ. संजय माहेश्वरी

यह कैसे सिद्ध किया प्रस्तुति दी। आपने आयुर्वेद में एनो रेक्टल सर्जरी में एनेस्थीसिया के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

डॉ. त्रिविक्रम त्रिपाठी (एच ओडी, डिपार्टमेंट ऑफ बालरोग गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसद्ध ने उत्तर प्रदेश सरकार से संज्ञाहरण विभाग खोलने की मांग करते हुए। अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा वास्तविक रूप से इंटीग्रेशन तब तक संभव नहीं है जब तक इंट्रावीनस दवा, दर्द नाशक दवा, इंट्रावीनस फ्ल्यूड की कानूनी अनुमति उत्तर प्रदेश में नहीं दी जाएगी। पूर्व में सपा सरकार ने अत्यंत सीमित अंग्रेजी दवाओं के उपयोग की अनुमति दी थी परंतु आयुर्वेद चिकित्सा को सिर्फ एनो रेक्टल सर्जरी तक ही सीमित कर दिया गया।

षष्ठम सत्र : मुख्य वक्ता डॉ. जी एस तोमर ने कुछ मुख्य बीमारियो जैसे कैंसर, डायबिटीज, एलर्जी के इलाज में आयुर्वेद के योगदान के विषय के बारे में बताया। असाध्य रोग को साध्य रोग करने में आयुर्वेद की भूमिका बताया। सात्म्य और असात्म्य आयुर्वेद के महत्वपपूर्ण विषय हैं जो आहार और जीवनशैली के साथ जुड़े हुए हैं। सात्म्य का अर्थ है 'अपने आप को अनुकूल बनाना' या 'स्वास्थ्य के अनुकूल'। यह उन चीजों को संदर्भित करता है जो हमारे शरीर और मन के लिए अनुकूल होती हैं और हमें स्वस्थ रखने में मदद करती हैं।

सात्म्य आहार वह आहार जो हमारे शरीर और मन के लिए अनुकूल हो और हमें स्वस्थ रखने में मदद करता है।

सात्म्य जीवनशैली वह जीवनशैली जो हमारे शरीर और मन के लिए अनुकूल हो और हमें स्वस्थ रखने में मदद करती है।

असात्म्य का अर्थ है 'अपने आप को प्रतिकूल बनाना' या 'स्वास्थ्य के प्रतिकूल'। यह उन चीजों को संदर्भित करता है जो हमारे शरीर और मन के लिए प्रतिकूल होती हैं और हमें अस्वस्थ बनाने में मदद करती हैं।

सात्म्य और असात्म्य की समझ आयुर्वेद में बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें अपने आहार और जीवनशैली को इस तरह से चुनने में मदद करती है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हो। सात्म्य आहार और जीवनशैली अपनाकर, हम अपने स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं और रोगों को रोक सकते हैं।

सत्र के अंत में डॉ. अशोक कुमार वार्ष्णेय ने वक्ता का आभार व्यक्त किया। अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी और महत्वपूर्ण बताया

सप्तम सत्र : मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. एंटोनियो मरांडी (चेयरमैन एंड डायरेक्टर, आयुर्वेद पॉइंट, मिलन इटली) ने 'कोलैबोरेटिव मेडिसिन एंड साइंस इन न्यूरोलॉजी' विषय पर विस्तार रूप से बताते हुए कहा की आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के बीच सहयोग न्यूरोलॉजी में नई संभावनाएं खोल सकता है। आयुर्वेद में विभिन्न जड़ी–बूटियों और योग के माध्यम से न्यूरोलॉजिकल विकारों के इलाज में मदद मिल सकती है, जैसे कि पार्किंसंस और अल्जाइमर। आयुर्वेदिक पद्धतियों का उपयोग करके न्यूरोलॉजिकल विकारों के लक्षणों को कमी और रोगी के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिलती है। यह सहयोग न्यूरोलॉजिकल विकारों के कारणों और उपचारों को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकते हैं।

उन्होंने रिफॉर्मेशन ऑफ आयुर्वेद एपिमेस्ट्रोलॉजी, मॉडलिंग ऑफ आयुर्वेदा और लोकेटाइजेशन ऑफ आयुर्वेद का भी जिक्र किया। इसके अलावा, आयुर्वेदिक योग और ध्यान भी न्यूरोलॉजिकल विकारों के इलाज में मददगार हो सकते हैं।

आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के बीच सहयोग से न्यूरोलॉजिकल विकारों के इलाज में नई संभावनाएं खुल सकती हैं और रोगियों को बेहतर उपचार विकल्प प्रदान किए जा सकते है।

अष्टम सत्र : आभासी माध्यम से जुड़ कर डॉ. सिमोन हंकाइजर (स्विस आयुर्वेद मेडिकल एकेडमी फाउंडिंग प्रेसिडेंट, स्विट्जरलैंड) इंटीग्रेटिव एंड कोलैबोरेटिव मेडिसिन के विषय के बारे में विस्तार से बताया वक्ता ने बताया कि आधुनिक युग में स्वास्थ्य की अवधारणा केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण पर आधारित है।

उन्होंने यह भी बताया कि सहयोगात्मक चिकित्सा में विभिन्न विशेषज्ञ एक साथ मिलकर रोगी के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं। इससे रोग का कारण, लक्षण, और रोगी की जीवनशैली तीनों पहलुओं को ध्यान में रखकर उपचार किया जाता

अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए चिकित्सक व शोधार्थी।

है। वक्ता ने उदाहरणों के माध्यम से बताया कि इस प्रकार की चिकित्सा न केवल रोग को ठीक करने में सहायक है, बल्कि रोग की पुनरावृत्ति को रोकने और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने में भी उपयोगी है।

अंत में उन्होंने कहा कि भविष्य की चिकित्सा प्रणाली समग्र और सहयोगात्मक दृष्टिकोण पर आधारित होगी, जिसमें परंपरागत और आधुनिक चिकित्सा का सम्मिलन होगा।

चेयर पर्सन डॉ. पवन कोडतवार टेक्निकल ऑफिसर वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन एस ई ए र ओ डीन रिसर्च को–चेयर पर्सन डॉ. जितेन्द्र मिश्रा) असिस्टेंट प्रोफेसर स्त्री रोग एवं प्रसूति तंत्र) उपस्थिति रहें।

कार्यक्रम में डॉ. संजय महेश्वरी डायरेक्टर ऑफ बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स), डॉ. जी.एस तोमर (प्रेसिडेंट विश्वा आयुर्वेद परिषद, डॉ. अशोक वार्ष्णेय) राष्ट्रीय आयोजन सचिव आरोग्य भारती आयुर्वेद कालेज के चिकित्सक, प्राध्यापक और देश विदेश से प्रतिभागी शोधार्थी उपस्थित रहें।

आयुर्वेद दिवस

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

आयुर्वेद दिवस पर धनवन्तरि यज्ञ करते हुए विशिष्ट अतिथि, प्राचार्य एवं विश्वविद्यालय परिवार

दिनांक: 18 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) और आईकेएस सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम 2025' का आज भव्य समापन किया गया। धन्वंतरि दिवस के पावन पर्व के अवसर पर आचार्य साध्वी नन्दन के संचालन में भव्य धन्वंतरि यज्ञ का आयोजन कर आयुर्वेद के आराध्य भगवान धन्वंतरि से लोककल्याण एवं आरोग्य की प्रार्थना की गई। यजमान रूप में आयुर्वेद कालेज प्राचार्य और इंग्लैंड से विशिष्ट अतिथि एलेक्स सहित गणमान्य अतिथि और चिकित्सक उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि इटली से डॉण् एलेक्स हैन्की ने अपने

संबोधन में महाविद्यालय द्वारा किए गए आत्मीय स्वागत के लिए धन्यवाद दिया।

धन्वंतरि यज्ञ के अनुभव को दिव्य और सुखद कहा। उन्होंने सभी के सुख एवं स्वास्थ्य की कामना की तथा इस संगोष्ठी की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

मुख्य अतिथि डॉ. के. आर. सी. रेड्डी ने आयोजकों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी ने आयुर्वेदिक ज्ञान को एक नए स्तर तक पहुँचाया है।

उन्होंने कहा कि हिंदू दर्शन में ही ऐसा अद्वितीय तत्व है जहाँ आरोग्य के देवता की उपासना की जाती है।आज विश्व में एकीकृत चिकित्सा पद्धतियों की ओर बढ़ता रुझान इस बात का प्रमाण है कि एक समग्र चिकित्सा पद्धति वैश्विक स्वास्थ्य का आधार बन सकता है।

अतिथि डॉ. पवन गोडाटवार ने कार्यक्रम के सफल संचालन में सहयोग देने वाले सभी को धन्यवाद दिया तथा सभी को दीपावली की शुभकामनाएँ दीं।

अंत में डॉ. नवोदय राजू ने इस संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी आगंतुकों, अतिथियों, विद्यार्थियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

इस समारोह में डॉ. सुमित कुमार एम., डॉ. टी. एम. त्रिपाठी, डॉ. अवनीश कुमार द्विवेदी, डॉ. जितेन्द्र मिश्रा, आचार्य साध्वीनन्दन पांडेय जी, डॉ. अभिजित एन. डॉ. विष्णु माया सहित, डॉ. देवी नायर, डॉ. रश्मि पुष्पन, डॉ. प्रीती पाण्डेय, डॉ. संध्या, डॉ. नवीन सहित आयुर्वेद कॉलेज प्राध्यापक, चिकित्सक और देश–विदेश आए शोध प्रस्तुतकर्ता प्रतिष्ठित विद्वान उपस्थित रहें।

अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार आरोग्य संगम-2025

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

समारोप समारोह में संबोधित करते हुए डॉ. पवन कोडतवार एवं उन्हें स्मृतिचिन्ह् भेंट करते हुए डॉ. के.आर.सी रेड्डी

दिनांक: 18 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर अन्तर्गत गुरु गोरक्षनाथ आयुर्विज्ञान संस्थान गोरखपुर और आईकेएस सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित, अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार के समापन दिवस के विशेष सत्र में डॉ. विठ्ठल हुड्डर प्रोफेसर, कायचिकित्सा विभाग, अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान एवं अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानए नई दिल्ली ने अपने व्याख्यान में समन्वित चिकित्सा प्रणाली में कैंसर उपचार के आयुर्वेदिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा बताए गए पारंपरिकए पूरक एवं समन्वित चिकित्सा पद्धतियों के सिद्धांतों

का उल्लेख किया और बताया कि समन्वित चिकित्सा प्रणाली का उद्देश्य संपूर्ण और समग्र दृष्टिकोण पर आधारित उपचार पद्धति को अपनाना है।

उन्होंने कहा कि चिकित्सा प्रणाली का एकीकरण तीन प्रमुख क्षेत्रों संसाधन, शिक्षा और व्यवहारिक प्रयोग में संभव है। अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया कि उनके चिकित्सालय में स्तन कैंसर और फेफड़ों का कैंसर सबसे सामान्य रूप से पाए जाने वाले रोग हैं। साथ ही उन्होंने कैंसर के आयुर्वेदिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला तथा रसायन चिकित्सा के महत्व को विस्तार से समझाया। अध्यक्षीय भाषण देते हुए डॉ. एलेक्स हैन्की प्रोफेसर एमेरिटस, योग विभाग, एमआईटीडब्लूपीयू डीपार्टमेंट ऑफ बायोसाइंस एण्ड टेक्नोलाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने समन्वित जीवविज्ञान विषय पर चर्चा करते हुए बताया कि समग्र जीवविज्ञान ही समग्र स्वास्थ्य और जीवन शक्ति को वैज्ञानिक रूप से समझाने में सक्षम है। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. रेश्मी पुष्पम प्रोफेसर अगद तंत्र विभाग द्वारा की गई तथा सह. अध्यक्षता डॉ. दीपु मनोहर सहायक प्रोफेसर, रचना शरीर विभाग ने की। कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. धन्या वी. नायर सहायक प्रोफेसर पंचकर्म विभाग द्वारा किया गया।

इस अवसर पर डॉ. गिरीधर वेदांतम प्राचार्य, जीजीआईएमएस, आचार्य साध्वी नंदन पांडे, डॉ. टीएम, त्रिपाठी, डॉ. प्रीति पांडे तथा आयुर्वेद कॉलेज प्राध्यापक चिकित्सक और शोधार्थी अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहें।

मुख्य अतिथि एवं संकाय के साथ विद्यार्थी

दिनांकः 30 अक्टूबर, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय में एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

इस सत्र में आईआर आरआई दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (ISARC), वाराणसी के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. (डॉ.) सुरेन्द्र सिंह ने की। अपने उद्बोधन में उन्होंने कृषि के क्षेत्र में आईआरआरआई द्वारा किए जा रहे अनुसंधान एवं नवाचार कार्यों की सराहना की तथा छात्रों को इस क्षेत्र में अधिक ज्ञान अर्जित करने एवं अनुसंधान के प्रति प्रेरित होने का संदेश दिया।

सत्र के शुभारम्भ कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दूबे ने स्वागत भाषण व डॉ. सुधांशु सिंह के उत्कृष्ट अकादमिक यात्रा के परिचय करवाते हुए किया।

मुख्य अतिथि डॉ. सुधांशु सिंह ने अपने व्याख्यान में धान (Rice) उत्पादन, गुणवत्ता सुधार, जल प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव तथा नवीन वैज्ञानिक तकनीकों के प्रयोग पर विस्तृत जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि उन्नत किस्मोंए सटीक पोषण प्रबंधन तथा डिजिटल कृषि तकनीकों के उपयोग से किसानों की उत्पादकता और आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है।

उन्होंने पूर्वांचल किसानो को धान की बुवाई में समय का विशेष महत्व दिए जाने पर जोर देते हुवे कहा कि इससे धान की उपज में वृद्धि होगी तथा किसानो की भी आय बढ़ेगी।

सत्र के अंत में मुख्यमंत्री सलाहकार डॉ. जी. एन. सिंह ने डॉ. सुधांशु सिंह का आभार व्यक्त किया और उनके उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक व्याख्यान की सराहना की।

इस अवसर पर डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. नवनीत सिंह, डॉ. सच्चिदानंद सिंह, फार्म सहायक सुरेश निषाद, तथा कृषि संकाय के सभी छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन ममता गुप्ता द्वारा किया गया।

विशिष्ट व्याख्यान

कृषि संकाय

दिनांकः 30 अक्टूबर, 2025 को गुरु गोरक्षनाथ आयुर्वेद संकाय में 'आर्युप्रवेशिका' का भव्य शुभारंभ हुआ। यह कार्यक्रम नवप्रवेशित विद्यार्थियों को आयुर्वेद की मूल अवधारणाओं, दर्शन और शिक्षण परंपरा से परिचित कराने के उद्देश्य से आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का आरंभ प्रातः नौ बजे प्राचार्य डॉ. गिरधर वेदांतम के स्वागत उद्बोधन से हुआ। उन्होंने नवप्रवेशित विद्यार्थियों का हार्दिक स्वागत करते हुए आयुर्वेद की महत्ता, उसके जीवनदायिनी सिद्धांतों और गुरु गोरक्षनाथ संस्थान की शैक्षिणिक परंपरा का परिचय कराया।

उन्होंने कहा कि आयुर्वेद केवल उपचार की पद्धति नहींए बल्कि जीवन को संतुलितए सात्त्विक और स्वस्थ बनाए रखने का विज्ञान है।

इसके पश्चात प्राचार्य महोदय ने अपने प्रेरक संबोधन में विद्यार्थियों से अनुशासन, समर्पण और

नवागत विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए माननीय कुलपति

साधना की भावना के साथ अध्ययन करने का आग्रह किया।

उन्होंने गुरु–शिष्य परंपरा की गरिमा का उल्लेख करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि आचरण से भी समाज में आयुर्वेद का आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेन्दर सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि आयुर्वेद भारत की आत्मा है, जो शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का मार्ग दिखाता है।

उन्होंने कहा कि यह विज्ञान व्यक्ति को केवल रोगमुक्त नहीं करता, बल्कि उसके जीवन को सात्त्विकता, संतुलन और समरसता की दिशा में अग्रसर करता है।

कुलपति महोदय ने विद्यार्थियों को परंपरागत ज्ञान और आधुनिक अनुसंधान के समन्वय से कार्य करने का संदेश दिया तथा विश्वविद्यालय की शैक्षणिक नीतियों की रूपरेखा से भी अवगत कराया।

इसके बाद चिकित्सालय के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अवनीश द्विवेदी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए चिकित्सालय की विभिन्न सुविधाओं,उपचार व्यवस्थाओं एवं रोगियों की सेवा के लिए अपनाई जाने वाली नीतियों की जानकारी दी।

उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि चिकित्सालय न केवल रोगियों की सेवा का केंद्र है, बल्कि विद्यार्थियों के लिए व्यवहारिक प्रशिक्षण और अनुभव अर्जन का श्रेष्ठ माध्यम भी है।

अल्पाहार के पश्चात विद्यार्थियों की पूर्व परीक्षा आयोजित की गई, तत्पश्चात विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों का परिचय सत्र संपन्न हुआ।

'अपने संस्थान को जानिए' विषय पर प्रस्तुति में संस्था की कार्यप्रणाली, विभागों तथा उपलब्धियों की जानकारी दी गई।

दोपहर के सत्र में विश्वविद्यालय के विभिन्न अधिष्ठाताओं – डॉ. प्रशांत एस. (अकादमिक), डॉ. रघु राम अचार (छात्र कल्याण), डॉ. मधुसूदन पुरोहित (अनुसंधान), डॉ. हरि ओम शरण (योजना एवं कार्यान्वयन) तथा श्री अमित कुमार सिंह (परीक्षा नियंत्रक) ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

अंतिम सत्र में विद्यार्थियों को महाविद्यालय, चिकित्सालय एवं औषधीय वनस्पति उद्यान का परिचयात्मक भ्रमण कराया गया तथा अभिभावकों के साथ संवाद कार्यक्रम आयोजित हुआ।

मुख्य बैठकें

15 अक्टूबर 2025	महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के वित्त समिति की माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे तथा विश्वविद्यालय के अर्धवार्षिक बजट की समीक्षा तथा प्रस्तावित से सम्बन्धित विभिन्न विन्दुओं पर विचार–विमर्श किया गया।
30 अक्टूबर 2025	महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कार्यपरिषद की माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे तथा कुल 77 विन्दुओं पर विचार–विमर्श किया गया।

विभागीय आयोजन

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

30 अक्टूबर से अक्टूबर, 2025	नवागत विद्यार्थियों 2025–2026 सत्र का दीक्षा पाठ्यचर्या
14 नवम्बर, 2025	अतिथि व्याख्यान
26 नवम्बर, 2025	संविधान दिवस
28 नवम्बर, 2025	अतिथि व्याख्यान

श्री गोरक्षनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेण्टर

02 नवम्बर, 2025	एमबीबीएस सत्र 2025–26 नवीन सत्र प्रारंभ
24–28 नवम्बर, 2025	तृतीय आंतरिक मूल्याकंन (बी एस सी एवं एमएससी)

कृषि संकाय

08 नवम्बर, 2025	पर्यावरण, सतत विकास व युवा नेतृत्व पर कार्यशाला
11 नवम्बर, 2025	पंचम सेमेस्टर के विद्यार्थियों का शैक्षणिक भ्रमण
30 नवम्बर, 2025	द्वितीय आंतरिक परीक्षा प्रारम्भ

एमजीयूजी के 19 ऑप्टोमेट्री विद्यार्थियों का लेंसकार्ट में चयन

»सूरत व राजकोट में नियुक्त होंगे चयनित विद्यार्थी, कुलपति ने दी बधाई

स्वतंत्र चेतना, नगर संवाददाता, गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय (एमजीयूजी) के डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री (बैच 2023) के 19 विद्यार्थियों का प्रतिष्ठित आईवियर कंपनी लेंसकार्ट में प्लेसमेंट हुआ है। चयनित विद्यार्थियों को सूरत, राजकोट सहित अन्य शहरों में नियुक्त किया जाएगा।

एमजीयूजी के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल ने नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के सहयोग से वर्चुअल कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव आयोजित किया, जिसे लेंसकार्ट द्वारा संचालित किया गया। इस ड्राइव में सम्मिलित 21 विद्यार्थियों में से 19 का चयन लेंसकार्ट में हुआ। चयनित विद्यार्थियों में युवराज, आलमगीर, विवेक विश्वकर्मा, माधुरी गुप्ता, शुभम यादव, अफसाना खातून, श्यामू कुमार, विवेक कनौजिया, अंकित कुमार, इन्द्रासनी गुप्ता, हर्षिता, संगम, मानसी, प्रियांशु सिंह, गुंजन, शालिनी चौबे, शांभवी पाठक, अर्चना गुप्ता और सत्येंद्र मौर्य शामिल हैं।

कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने विद्यार्थियों को बधाई दी और कहा कि यह विश्वविद्यालय के रोजगारपरक पाठ्यक्रम और विद्यार्थियों को सेवायोजित कराने की प्रतिबद्धता का परिणाम है। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के निदेशक डॉ. मधुसूदन पुरोहित, नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय की प्रमुख डॉ. डीएस अजीथा, पैरामेडिकल के प्रिंसिपल रोहित कुमार श्रीवास्तव, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के समन्वयक अनूप कुमार मिश्रा, अभिनव सिंह राठौर, सुप्रिया गुप्ता और माधुरी चौरसिया ने भी चयनित विद्यार्थियों को बधाई दी।

एमजीयूजी के 19 विद्यार्थियों का लेंसकार्ट में प्लेसमेंट

गोरखपुर (विधान केसरी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर एमजीयूजी के डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री के 19 विद्यार्थियों का प्लेसमेंट प्रतिष्ठित आईवियर कंपनी लेंसकार्ट में हुआ है। इन्हें सूरत, राजकोट आदि स्थानों पर नियुक्त किया जाएगा।

एमजीयूजी के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल ने नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के सहयोग से डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री बैच 2023 के विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया, जिसे लेंसकार्ट द्वारा संचालित किया गया। इस प्लेसमेंट ड्राइव में सम्मिलित 21 विद्यार्थियों में से 19 विद्यार्थियों का चयन लेंसकार्ट में हुआ है। चयनित विद्यार्थियों में युवराज, आलमगीर, विवेक विश्वकर्मा, माधुरी गुप्ता, शुभम यादव, अफ्साना खातून, श्यामू कुमार, विवेक कनौजिया, अंकित कुमार, इन्द्रासनी गुप्ता, हर्षिता, संगम, मानसी, प्रियांशु सिंह, गुंजन, शालिनी चौबेए शांभवी पाठक, अर्चना गुप्ता और सत्येंद्र मौर्य शामिल हैं।

ऑप्टोमेट्री के इन विद्यार्थियों के शानदार प्लेसमेंट पर कुलपति डॉ सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव ने बधाई देते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय के रोजगारपरक कोर्स और विद्यार्थियों को सेवायोजित कराने की प्रतिबद्धता का प्रतिफल है। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के निदेशक डॉ मधुसूदन पुरोहित, नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय की प्रमुख डॉ डीएस अजीथा, पैरामेडिकल के प्रिंसिपल रोहित कुमार श्रीवास्तव, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के समन्वयक अनूप कुमार मिश्रा, अभिनव सिंह राठौर, सुप्रिया गुप्ता, माधुरी चौरसिया आदि ने भी चयनित विद्यार्थियों को बधाई दी है।

19 MGUG students have been selected by Lenskart in placement drive

JEEVAN EXPRESS BUREAU

GORAKHPUR: 19 students of MGUG Diploma in Optometry, have been placed at the prestigious eyewear company, Lenskart. They will be placed in locations like Surat, Rajkot, and more. The Training and Placement Cell of MGUG, in collaboration with the Nursing and Paramedical Faculty, organized a virtual campus placement drive for Diploma in Optometry (Batch 2023) students, conducted by Lenskart. A total of 21 students participated in the

placement drive. Congratulating the students on their placement, Vice Chancellor Dr. Surinder Singh and Registrar Dr. Pradeep Kumar Rao stated that this is a testament to the university's commitment to employable courses and student employment. Dr. Madhusudan Purohit, Director of the Training and Placement Cell, Dr. D.S. Ajitha, Head of the Nursing and Paramedical Faculty, Rohit Kumar Srivastava, Principal of Paramedical, Anoop Kumar Mishra, Abhinav Singh Rathore, Supriya Gupta, Madhuri Chaurasia, and others also congratulated the selected students.

एमजीयूजी के 19 छात्रों का लेंसकार्ट में प्लेसमेंट

- चयनित विद्यार्थियों को सूरत, राजकोट में की जाएगी नियुक्ति
- 21 विद्यार्थियों ने साक्षात्कार में लिया हिस्स कुलपति ने जताई खुशी

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री के 19 विद्यार्थियों का प्लेसमेंट प्रतिष्ठित आईवियर कंपनी लेंसकार्ट में हुआ है। इन्हें सूरत, राजकोट आदि स्थानों पर नियुक्त किया जाएगा।

एमजीयूजी के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल ने नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के सहयोग से डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री (बैच 2023) के विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया, जिसे लेंसकार्ट द्वारा संचालित किया गया। इस प्लेसमेंट ड्राइव में सम्मिलित 21 विद्यार्थियों में से 19 विद्यार्थियों का चयन लेंसकार्ट में हुआ है। चयनित विद्यार्थियों में युवराज, आलमगीर, विवेक विश्वकर्मा, माधुरी गुप्ता, शुभम यादव, अफसाना खातून, श्यामू कुमार, विवेक कनौजिया, अंकित कुमार, इन्द्रासनी गुप्ता, हर्षिता, संगम, मानसी, प्रियांशु सिंह, गुंजन, शालिनी चौबे, शांभवी पाठक, अर्चना गुप्ता और सत्येंद्र मौर्य शामिल हैं।

कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह अ कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के रोजगारपरक क और विद्यार्थियों को सेवायोजित क की प्रतिबद्धता का प्रतिफल है।

प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल निदेशक डॉ. मधुसूदन पुरोहित, न एवं पैरामेडिकल संकाय की प्रमुख डीएस अजीथा, पैरामेडिकल प्रिंसिपल रोहित कुमार श्रीवास्त प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल समन्वयक अनूप कुमार मि अभिनव सिंह राठौर, सुप्रिया गु माधुरी चौरसिया ने बधाई दी है।

एमजीयूजी के 19 विद्यार्थियों का लेंसकार्ट में प्लेसमेंट

विश्वविद्यालय के रोजगारपरक कोर्स और विद्यार्थियों को सेवायोजित कराने की प्रतिबद्धता का प्रतिफल है : डॉ. प्रदीप कुमार राव

नव अमृत प्रभात संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर एमजीयूजी के डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री के 19 विद्यार्थियों का प्लेसमेंट प्रतिष्ठित आईवियर कंपनी लेंसकार्ट में हुआ है। इन्हें सूरत, राजकोट आदि स्थानों पर नियुक्त किया जाएगा। एमजीयूजी के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल ने नर्सिंग एवं

पैरामेडिकल संकाय के सहयोग से डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री (बैच 2023) के विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया, जिसे लेंसकार्ट द्वारा संचालित किया गया। इस प्लेसमेंट ड्राइव में सम्मिलित 21 विद्यार्थियों में से 19 विद्यार्थियों का चयन लेंसकार्ट में हुआ है। चयनित विद्यार्थियों में युवराज, आलमगीर, विवेक विश्वकर्मा, माधुरी गुप्ता, शुभम यादव, अफसाना खातून, श्यामू कुमार, विवेक कनौजिया, अंकित कुमार, इन्द्रासनी गुप्ता, हर्षिता, संगम, मानसी, प्रियांशु सिंह, गुंजन, शालिनी चौबे, शांभवी पाठक, अर्चना गुप्ता और सत्येंद्र मौर्य शामिल हैं। ऑप्टोमेट्री के इन विद्यार्थियों के शानदार प्लेसमेंट पर कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बधाई देते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय के रोजगारपरक कोर्स और विद्यार्थियों को सेवायोजित कराने की प्रतिबद्धता का प्रतिफल है। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के निदेशक डॉ. मधुसूदन पुरोहित, नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय की प्रमुख डॉ. डीएस अजीथा, पैरामेडिकल के प्रिंसिपल रोहित कुमार श्रीवास्तव, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के समन्वयक अनूप कुमार मिश्रा, अभिनव सिंह राठौर, सुप्रिया गुप्ता, माधुरी चौरसिया आदि ने भी चयनित विद्यार्थियों को बधाई दी है।

एमजीयूजी के 19 विद्यार्थियों का लेंसकार्ट में प्लेसमेंट

गोरखपुर।(स्पष्ट आवाज)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर एमजीयूजी के डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री के 19 विद्यार्थियों का प्लेसमेंट प्रतिष्ठित आईवियर कंपनी लेंसकार्ट में हुआ है। इन्हें सूरत, राजकोट आदि स्थानों पर नियुक्त किया जाएगा।

एमजीयूजी के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल ने नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के सहयोग से डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री (बैच 2023) के विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया, जिसे लेंसकार्ट द्वारा संचालित किया गया। इस प्लेसमेंट ड्राइव में सम्मिलित 21 विद्यार्थियों में से 19 विद्यार्थियों का चयन लेंसकार्ट में हुआ है। चयनित विद्यार्थियों में युवराज, आलमगीर, विवेक विश्वकर्मा, माधुरी गुप्ता, शुभम यादव, अफसाना खातून, श्यामू कुमार, विवेक कनौजिया, अंकित कुमार, इन्द्रासनी गुप्ता, हर्षिता, संगम, मानसी, प्रियांशु सिंह, गुंजन, शालिनी चौबे, शांभवी पाठक, अर्चना गुप्ता और सत्येंद्र मौर्य शामिल हैं। ऑप्टोमेट्री के इन विद्यार्थियों के शानदार प्लेसमेंट पर कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बधाई देते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय के रोजगारपरक कोर्स और विद्यार्थियों को सेवायोजित कराने की प्रतिबद्धता का प्रतिफल है। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के निदेशक डॉ. मधुसूदन पुरोहित, नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय की प्रमुख डॉ. डीएस अजीथा, पैरामेडिकल के प्रिंसिपल रोहित कुमार श्रीवास्तव, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के समन्वयक अनूप कुमार मिश्रा, अभिनव सिंह राठौर, सुप्रिया गुप्ता, माधुरी चौरसिया आदि ने भी चयनित विद्यार्थियों को बधाई दी है।

गोरखनाथ विवि के 19 विद्यार्थियों को मिला प्लेसमेंट

गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालयके डिप्लोमा इन आप्टोमेट्री के 19 विद्यार्थियों का प्लेसमेंट प्रतिष्ठित आइवियर कंपनी लेंसकार्ट में हुआ है। इन्हें सूरत, राजकोट आदि स्थानों पर नियुक्ति मिलेगी। इसके लिए आयोजित प्लेसमेंट ड्राइव में 21 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

कुलपति डा. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने बधाई दी है। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के निदेशक डा. मधुसूदन पुरोहित, नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय की प्रमुख डा.. डीएस अजीथा, पैरामेडिकल कालेज के प्राचार्य रोहित कुमार श्रीवास्तव, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के समन्वयक अनूप कुमार मिश्रा ने सफल विद्यार्थियों को बधाई दी है।

'एमजीयूजी के 19 विद्यार्थियों का लेंसकार्ट में प्लेसमेंट'

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर एमजीयूजी के डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री के 19 विद्यार्थियों का प्लेसमेंट प्रतिष्ठित आईवियर कंपनी लेंसकार्ट में हुआ है। इन्हें सूरत, राजकोट आदि स्थानों पर नियुक्त किया जाएगा।

एमजीयूजी के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल ने नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के सहयोग से डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री (बैच 2023) के विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया, जिसे लेंसकार्ट द्वारा संचालित किया गया। इस प्लेसमेंट ड्राइव में सम्मिलित 21 विद्यार्थियों में से 19 विद्यार्थियों का चयन लेंसकार्ट में हुआ है। चयनित विद्यार्थियों में युवराज, आलमगीर, विवेक विश्वकर्मा, माधुरी गुप्ता, शुभम यादव, अफसाना खातून, श्यामू कुमार, विवेक कनौजिया, अंकित कुमार, इन्द्रासनी गुप्ता, हर्षिता, संगम, मानसी, प्रियांशु सिंह, गुंजन, शालिनी चौबे, शांभवी पाठक, अर्चना गुप्ता और सत्येंद्र मौर्य शामिल हैं।

ऑप्टोमेट्री के इन विद्यार्थियों के शानदार प्लेसमेंट पर कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बधाई देते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय के रोजगारपरक कोर्स और विद्यार्थियों को सेवायोजित कराने की प्रतिबद्धता का प्रतिफल है। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के निदेशक डॉ. मधुसूदन पुरोहित, नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय की प्रमुख डॉ. डीएस अजीथा, पैरामेडिकल के प्रिंसिपल रोहित कुमार श्रीवास्तव, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के समन्वयक अनूप कुमार मिश्रा, अभिनव सिंह राठौर, सुप्रिया गुप्ता, माधुरी चौरसिया आदि ने भी चयनित विद्यार्थियों को बधाई दी है।

19 विद्यार्थियों का लेंसकार्ट में प्लेसमेंट

गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय एमजीयूजी के डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री के 19 विद्यार्थियों का प्लेसमेंट प्रतिष्ठित आईवियर कंपनी लेंसकार्ट में हुआ है। इन्हें सूरत, राजकोट आदि स्थानों पर नियुक्त किया जाएगा। एमजीयूजी के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल ने नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के सहयोग से डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री (बैच 2023) के विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया, जिसे लेंसकार्ट द्वारा संचालित किया गया। इसमें 21 विद्यार्थियों में से 19 विद्यार्थियों का चयन लेंसकार्ट में हुआ है। इनमें युवराज, आलमगीर, विवेक विश्वकर्मा, माधुरी गुप्ता, शुभम यादव, अफसाना खातून, श्यामू कुमार, विवेक कनौजिया, अंकित कुमार, इन्द्रासनी गुप्ता, हर्षिता, संगम, मानसी, प्रियांशु सिंह, गुंजन, शालिनी चौबे, शांभवी अर्चना और सत्येंद्र हैं।

एमजीयूजी के 19 विद्यार्थियों का लेंसकार्ट में प्लेसमेंट

गोरखपुर (गो०मे०सं०)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर एमजीयूजी के डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री के 19 विद्यार्थियों का प्लेसमेंट प्रतिष्ठित आईवियर कंपनी

लेंसकार्ट में हुआ है। इन्हें सूरत, राजकोट आदि स्थानों पर नियुक्त किया जाएगा। एमजीयूजी के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल ने नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के सहयोग से डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री (बैच 2023) के विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया, जिसे लेंसकार्ट द्वारा संचालित किया गया। इस प्लेसमेंट ड्राइव में सम्मिलित 21 विद्यार्थियों में से 19 विद्यार्थियों का चयन लेंसकार्ट में हुआ है। चयनित विद्यार्थियों में युवराज, आलमगीर, विवेक विश्वकर्मा, माधुरी गुप्ता, शुभम यादव, अफसाना खातून, श्यामू कुमार, विवेक कनौजिया, अंकित कुमार, इन्द्रासनी गुप्ता, हर्षिता, संगम, मानसी, प्रियांशु सिंह, गुंजन, शालिनी चौबे, शांभवी पाठक, अर्चना गुप्ता और सत्येंद्र मौर्य शामिल हैं। ऑप्टोमेट्री के इन विद्यार्थियों के शानदार प्लेसमेंट पर कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बधाई देते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय के रोजगारपरक कोर्स और विद्यार्थियों को सेवायोजित कराने की प्रतिबद्धता का प्रतिफल है। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के निदेशक डॉ. मधुसूदन पुरोहित, नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय की प्रमुख डॉ. डीएस अजीथा, पैरामेडिकल के प्रिंसिपल रोहित कुमार श्रीवास्तव, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के समन्वयक अनूप कुमार मिश्रा, अभिनव सिंह राठौर, सुप्रिया गुप्ता, माधुरी चौरसिया आदि ने भी चयनित विद्यार्थियों को बधाई दी है।

एमजीयूजी के 19 विद्यार्थियों का लेंसकार्ट में प्लेसमेंट

गोरखपुर (ब्यूरो)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर एमजीयूजी के डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री के 19 विद्यार्थियों का प्लेसमेंट प्रतिष्ठित आईवियर कंपनी लेंसकार्ट में हुआ है। इन्हें सूरत, राजकोट आदि स्थानों पर नियुक्त किया जाएगा। एमजीयूजी के प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल ने नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के सहयोग से डिप्लोमा इन ऑप्टोमेट्री (बैच 2023) के विद्यार्थियों के लिए वर्चुअल कैंपस प्लेसमेंट ड्राइव का आयोजन किया, जिसे लेंसकार्ट द्वारा संचालित किया गया। इस प्लेसमेंट ड्राइव में सम्मिलित 21 विद्यार्थियों में से 19 विद्यार्थियों का चयन लेंसकार्ट में हुआ है। चयनित विद्यार्थियों में युवराज, आलमगीर, विवेक विश्वकर्मा, माधुरी गुप्ता, शुभम यादव, अफसाना खातून, श्यामू कुमार, विवेक कनौजिया, अंकित कुमार, इन्द्रासनी गुप्ता, हर्षिता, संगम, मानसी, प्रियांशु सिंह, गुंजन, शालिनी चौबे, शांभवी पाठक, अर्चना गुप्ता और सत्येंद्र मौर्य शामिल हैं। ऑप्टोमेट्री के इन विद्यार्थियों के शानदार प्लेसमेंट पर कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बधाई देते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय के रोजगारपरक कोर्स और विद्यार्थियों को सेवायोजित कराने की प्रतिबद्धता का प्रतिफल है। प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के निदेशक डॉ. मधुसूदन पुरोहित, नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय की प्रमुख डॉ. डीएस अजीथा, पैरामेडिकल के प्रिंसिपल रोहित कुमार श्रीवास्तव, प्रशिक्षण एवं प्लेसमेंट सेल के समन्वयक अनूप कुमार मिश्रा, अभिनव सिंह राठौर, सुप्रिया गुप्ता, माधुरी चौरसिया आदि ने भी चयनित विद्यार्थियों को बधाई दी है।

स्वास्थ्य देखभाल को अधिक समग्र और प्रभावी बनाती है एकीकृत चिकित्सा : डॉ. रजनी नायर

- एमजीयूजी के आयुर्वेद कॉलेज में एकीकृत चिकित्सा की दिशा में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' का शुभारंभ
- विज्ञान, दर्शन और जीवन पद्धति को एक सूत्र में पिरोता है आयुर्वेद : डॉ. सुरिंदर सिंह

एकीकृत चिकित्सा की दिशा में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' का शुभारंभ

- स्वास्थ्य देखभाल को अधिक समग्र और प्रभावी बनाती है एकीकृत चिकित्सा : डॉ. रजनी नायर
- विज्ञान, दर्शन और जीवन पद्धति को एक सूत्र में पिरोता है आयुर्वेद : डॉ. सुरिंदर सिंह

एमजीयूजी में मनाया गया विश्व एनेस्थीसिया दिवस

गोरखपुर, १६ अक्टूबर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में गुरुवार को विश्व एनेस्थीसिया दिवस मनाया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हेरिटेज इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज वाराणसी के सीनियर ओटी टेक्नीशियन राजेश कुमार पटेल ने एनेस्थीसिया विज्ञान के महत्व, इतिहास और आधुनिक चिकित्सा में इसके योगदान पर प्रकाश डाला। श्री पटेल ने कहा कि इस वर्ष एनेस्थीसिया दिवस का थीम 'एनेस्थीसिओलॉजी इन हेल्थ इमरजेंसी' है। उन्होंने कहा कि आज की चिकित्सा प्रणाली में कई गंभीर बीमारियों के इलाज में सर्जरी की जरूरत पड़ती है और एनेस्थीसिया विशेषज्ञ के बिना इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। इस अवसर पर नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा, पैरामेडिकल के प्राचार्य डॉ. रोहित श्रीवास्तव, संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

एकीकृत चिकित्सा पद्धति रोगों की रोकथाम का प्रभावी माध्यम : डॉ. रजनी

विज्ञान, दर्शन और जीवन पद्धति को एक सूत्र में पिरोता है आयुर्वेद : डॉ. सुरिंदर सिंह

स्वतंत्र चेतना

नगर संवाददाता, गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में गुरुवार को एकीकृत चिकित्सा की दिशा में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आरोग्य संगम का शुभारंभ हुआ। सेमिनार का उद्देश्य पारंपरिक और आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के समन्वय से स्वास्थ्य क्षेत्र में नई दिशा प्रदान करना है।

उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि बोर्ड ऑफ एथिक्स एंड रजिस्ट्रेशन फॉर इंडियन सिस्टम ऑफ मेडिसिन (बेरिस्म) की अध्यक्ष डॉ. रजनी ए. नायर ने कहा कि एकीकृत चिकित्सा पद्धति रोगों की रोकथाम, उपचार और समग्र स्वास्थ्य संवर्धन का प्रभावी माध्यम बन सकती है। अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने कहा कि आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐसा विज्ञान है जो जीवन, दर्शन और चिकित्सा को एक सूत्र में जोड़ता है।

आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने कहा कि आयुर्वेद केवल उपचार पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है। कार्यक्रम के दौरान आरोग्य संगम की स्मारिका का विमोचन किया गया और भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र एवं वेबसाइट का उद्घाटन हुआ। स्पार्क एवं हैकथन रिसर्च वर्क के लिए ईश्वर चंद गुप्ता, राम गोपाल तिवारी, सुरभि द्विवेदी, अंकिता सहानी और नितेश दुबे को सम्मानित किया गया। डॉ. शांति भूषण की पुस्तक आयुर्वेदा टू प्वाइंट जीरो का विमोचन भी हुआ।

सेमिनार का उद्घाटन दीप प्रज्वलन के साथ कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, डॉ. रजनी ए. नायर, आईसीएमआर-एनआइटीएम के निदेशक डॉ. सुबर्णा रॉय, नेपाल के पतंजलि आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज के प्रो. डॉ. संजय पोखरेल, डब्ल्यूएचओ साउथ ईस्ट एशिया रीजनल ऑफिस के टेक्निकल ऑफिसर डॉ. पवन गोडटवार और आयुष विज्ञानी डॉ. अरविंद चोपड़ा ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम में बिरला ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के निदेशक डॉ. संजय माहेश्वरी, विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डॉ. जी.एस. तोमर, यूनाइटेड किंगडम से आए डॉ. एलेक्स हैंकी, आरोग्य भारती के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अशोक वार्ष्णेय आदि उपस्थित रहे।

उप प्राचार्य डॉ. सुमित कुमार ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। आयोजन सचिव डॉ. श्रीधर ने बताया कि यह अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 18 अक्टूबर तक चलेगा, जिसमें पांच देशों और भारत के 12 राज्यों के विशेषज्ञ एकीकृत चिकित्सा की संभावनाओं और वैश्विक योगदान पर अपने विचार साझा करेंगे।

स्वास्थ्य देखभाल को अधिक समग्र और प्रभावी बनाती है एकीकृत चिकित्सा-डॉ. रजनी नायर

❖एमजीयूजी के आयुर्वेद कॉलेज में एकीकृत चिकित्सा की दिशा में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' का शुभारंभ❖विज्ञान, दर्शन और जीवन पद्धति को एक सूत्र में पिरोता है आयुर्वेद-डॉ. सुरिंदर सिंह

गोरखपुर, १६ अक्टूबर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में एकीकृत चिकित्सा की दिशा में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' का शुभारंभ गुरुवार को हुआ। उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि बोर्ड ऑफ एथिक्स एंड रजिस्ट्रेशन फॉर इंडियन सिस्टम ऑफ मेडिसिन (बेरिस्म) की अध्यक्ष डॉ. रजनी ए. नायर ने एकीकृत चिकित्सा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह चिकित्सा पद्धति पारंपरिक और आधुनिक उपचार प्रणालियों के समन्वय से रोगों की रोकथाम, उपचार एवं समग्र स्वास्थ्य संवर्धन का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने कहा कि इंटीग्रेटिव मेडिसिन (एकीकृत चिकित्सा) का भविष्य उज्ज्वल है, क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वास्थ्य देखभाल को अधिक समग्र, सुरक्षित और प्रभावी बनाने की दिशा में अग्रसर है। डॉ. नायर ने राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग (एनसीआईएसएम) के दृष्टि और लक्ष्य की जानकारी देते हुए कहा कि आयोग का उद्देश्य पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाना तथा वैद्यकीय शिक्षा में गुणवत्ता और पारदर्शिता सुनिश्चित करना है। उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए एमजीयूजी के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने कहा कि आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐसा अमूल्य अंग है जो विज्ञान, दर्शन और जीवन पद्धति तीनों को एक सूत्र में पिरोता है। कार्यक्रम के दौरान आरोग्य संगम सेमिनार की स्मारिका का विमोचन तथा भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र एवं वेबसाइट का उद्घाटन भी किया गया। साथ ही स्पार्क एवं हैकथन रिसर्च वर्क के लिए ईश्वर चंद्र गुप्ता, राम गोपाल तिवारी, सुरभि द्विवेदी, अंकिता सहानी, नितेश दूबे को सम्मानित किया गया। अतिथियों ने डॉ. शांति भूषण की पुस्तक 'आयुर्वेदा टू प्वाइंट जीरो' का विमोचन भी किया। इसके पहले अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ डॉ. सुरिंदर सिंह, डॉ. रजनी ए. नायर, आईसीएमआर एनआइटीएम के निदेशक डॉ. सुबर्णा रॉय, पतंजलि आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज और अनुसंधान केंद्र नेपाल के प्रोफेसर डॉ. संजय पोखरेल, विश्व स्वास्थ्य संगठन के साउथ ईस्ट एशिया रीजनल ऑफिस के टेक्निकल ऑफिसर डॉ. पवन गोडटवार, प्रतिष्ठित आयुष विज्ञानी डॉ. अरविंद चोपड़ा ने दीप प्रज्वलित कर किया। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना एवं धन्वंतरी वंदना ने कार्यक्रम को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की। आभार ज्ञापन उप प्राचार्य डॉ. सुमित कुमार ने किया। आयोजन सचिव डॉ. श्रीधर ने बताया कि यह अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 18 अक्टूबर तक चलेगा, उद्घाटन समारोह में बिरला ग्रुप आफ हॉस्पिटल्स के निदेशक डॉ. संजय माहेश्वरी, विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डॉ. जीएस तोमर, यूनाइटेड किंगडम से आए डॉ. एलेक्स हैंकी, आरोग्य भारती के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अशोक वार्ष्णेय, विश्वविद्यालय व आयुर्वेद कालेज के डीन, चिकित्सक, प्राध्यापक और देश विदेश से प्रतिभागी शोधार्थी उपस्थित रहे।

तन-मन-आत्मा का संतुलन ही वास्तविक स्वास्थ्य : पोखरेल

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विवि (एमजीयूजी) के गुरु

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आरोग्य संगम-2025 के पहले दिन वैज्ञानिक सत्रों का आयोजन

गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कालेज) में गुरुवार को उद्घाटित एकीकृत चिकित्सा केंद्रित अंतरराष्ट्रीय सेमीनार 'आरोग्य संगम - 2025' के तहत पहले दिन विभिन्न विषयों पर वैज्ञानिक सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता नेपाल से आए काय चिकित्सा विशेषज्ञ डा. संजय पोखरेल ने 'चिकित्सा पर्यटन और समग्र कल्याण का दायरा' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

डा. पोखरेल ने आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों को स्पष्ट करते हुए कहा कि आयुर्वेद के अनुसार जब शरीर, मन और आत्मा में संतुलन होता है, तभी वास्तविक स्वास्थ्य और सुख की प्राप्ति होती है। उन्होंने बताया कि आहारविहार, योगप्राणायाम, ध्यान और पंचकर्म आयुर्वेद में समग्र स्वास्थ्य के प्रमुख अंग हैं। आने वाले समय में यह क्षेत्र रोजगार के नए अवसरों का भी आधार बनेगा। इस सत्र की अध्यक्षता डा. अशोक वार्ष्णेय ने की। द्वितीय सत्र में डा. रजनी ए. नायर ने इंटीग्रेटिव मेडिसिन के महत्व को बताते हुए कहा यह एक ऐसी पद्धति है जो पारंपरिक और वैकल्पिक चिकित्सा को मिलाकर रोगों के उपचार और व्यक्तिगत देखभाल पर केंद्रित है। तीसरे सत्र में राष्ट्रीय पारंपरिक चिकित्सा संस्थान के वैज्ञानिक डा. सुबर्णा रय ने इंटीग्रेटिव हेल्थ की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए इसके महत्व एवं लाभों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इंटीग्रेटिव हेल्थ के कंपोनेंट के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया और यह उल्लेख किया कि इस क्षेत्र में अनुसंधान अत्यंत आवश्यक है, किन्तु वर्तमान समय में यह प्रक्रिया धीमी गति से प्रगति कर रही है।

चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता सीएसआईआर सीआईएमएडी, लखनऊ के सीनियर प्रिंसिपल साइंटिस्ट ड. रमेश श्रीवास्तव ने 'आयुर्वेद एवं मानव कल्याण में औषधीय एवं सुगंधित पौधों के सतत उपयोग' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बताया कि किसानों तथा हर्बल एवं एरोमैटिक उद्योगों के लिए औषधीय एवं सुगंधित पौधों की उन्नत किस्मों का विकास किया जा रहा है। सत्र की अध्यक्षता आल इंडिया इंस्टिट्यूट आफ आयुर्वेद के निदेशक डा. मनोरंजन शाहू ने की। पांचवें सत्र में नीमहंस बेंगलुरु में इंटीग्रेटिव मेडिसिन के हेड किशोर रामण्णन सिजोफ्रेनिया और इसके लक्षणों के बारे में बताया। उन्होंने डिप्रेशन और उसके आयुर्वेदिक उपचार पर भी प्रकाश डाला।

शरीर, मन और आत्मा का संतुलन ही वास्तविक स्वास्थ्य : डॉ. संजय पोखरेल

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आरोग्य संगम-2025 के पहले दिन वैज्ञानिक सत्रों का आयोजन

गोरखपुर (गो०मे०सं०)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में गुरुवार को उद्घाटित एकीकृत चिकित्सा केंद्रित अंतरराष्ट्रीय सेमीनार 'आरोग्य संगम – 2025' के तहत पहले दिन विभिन्न विषयों पर वैज्ञानिक सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता नेपाल से आए काय चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. संजय पोखरेल ने 'चिकित्सा पर्यटन और समग्र कल्याण का दायरा' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान

प्रस्तुत किया। डॉ. पोखरेल ने आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों को स्पष्ट करते हुए कहा कि आयुर्वेद के अनुसार जब शरीर, मन और आत्मा में संतुलन होता है, तभी वास्तविक स्वास्थ्य और सुख की प्राप्ति होती है। उन्होंने बताया कि आहारङ्गविहार, योगङ्गप्राणायाम, ध्यान और पंचकर्म आयुर्वेद में समग्र स्वास्थ्य के प्रमुख अंग हैं। आने वाले समय में यह क्षेत्र रोजगार के नए अवसरों का भी आधार बनेगा। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. अशोक वार्ष्णेय ने की। द्वितीय सत्र में डॉ. रजनी ए. नायर ने इंटीग्रेटिव मेडिसिन के महत्व को बताते हुए कहा यह एक ऐसी पद्धति है जो पारंपरिक और वैकल्पिक चिकित्सा को मिलाकर रोगों के उपचार और व्यक्तिगत देखभाल पर केंद्रित है। तीसरे सत्र में राष्ट्रीय पारंपरिक चिकित्सा संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. सुबर्णा रॉय ने इंटीग्रेटिव हेल्थ की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए इसके महत्व एवं लाभों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इंटीग्रेटिव हेल्थ के कंपोनेंट के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया और यह उल्लेख किया कि इस क्षेत्र में अनुसंधान अत्यंत आवश्यक है, किन्तु वर्तमान समय में यह प्रक्रिया धीमी गति से प्रगति कर रही है। चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता सीएसआईआर सीआईएमएडी, लखनऊ के सीनियर प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. रमेश श्रीवास्तव ने 'आयुर्वेद एवं मानव कल्याण में औषधीय एवं सुगंधित पौधों के सतत उपयोग' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बताया कि किसानों तथा हर्बल एवं एरोमैटिक उद्योगों के लिए औषधीय एवं सुगंधित पौधों की उन्नत किस्मों का विकास किया जा रहा है। सत्र की अध्यक्षता आल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेद के निदेशक डॉ. मनोरंजन शाहू ने की। पांचवें सत्र में नीमहंस बेंगलुरु में इंटीग्रेटिव मेडिसिन के हेड किशोर रामकृष्णन सिजोफ्रेनिया और इसके लक्षणों के बारे में बताया। उन्होंने डिप्रेशन और उसके आयुर्वेदिक उपचार पर भी प्रकाश डाला।

एमजीयूजी में मनाया गया विश्व एनेस्थीसिया दिवस

स्वतंत्र चेतना, नगर संवाददाता, गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में गुरुवार को विश्व एनेस्थीसिया दिवस मनाया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हेरिटेज इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज वाराणसी के सीनियर ओटी टेक्नीशियन राजेश कुमार पटेल ने एनेस्थीसिया विज्ञान के महत्व, इतिहास और आधुनिक चिकित्सा में इसके योगदान पर प्रकाश डाला। श्री पटेल ने कहा कि इस वर्ष एनेस्थीसिया दिवस का थीम ह्यएनेस्थीसिओलॉजी इन हेल्थ इमरजेंसी है। उन्होंने कहा कि आज की चिकित्सा प्रणाली में कई गंभीर बीमारियों के इलाज में सर्जरी की जरूरत पड़ती है और एनेस्थीसिया विशेषज्ञ के बिना इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। इस अवसर पर नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा, पैरामेडिकल के प्राचार्य डॉ. रोहित श्रीवास्तव, संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

केंद्रीकृत

शरीर, मन और आत्मा का संतुलन ही वास्तविक स्वास्थ्य : डॉ. संजय पोखरेल

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आरोग्य संगम-2025 के पहले दिन वैज्ञानिक सत्रों का आयोजन

स्वास्थ्य देखभाल को अधिक समग्र और प्रभावी बनाती है एकीकृत चिकित्सा

- एमजीयूजी के आयुर्वेद कालेज में एकीकृत चिकित्सा की दिशा में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' का शुभारंभ
- विज्ञान, दर्शन और जीवन पद्धति को एक सूत्र में पिरोता है आयुर्वेद : डॉ. सुरिंदर सिंह

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विवि (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कालेज) में एकीकृत चिकित्सा की दिशा में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' का शुभारंभ गुरुवार को हुआ। उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि बोर्ड आफ एथिक्स एंड रजिस्ट्रेशन फर इंडियन सिस्टम आफ मेडिसिन (बेरिस्म) की अध्यक्ष डॉ. रजनी ए. नायर ने एकीकृत चिकित्सा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह चिकित्सा पद्धति पारंपरिक और आधुनिक उपचार प्रणालियों के समन्वय से रोगों की रोकथाम, उपचार एवं समग्र स्वास्थ्य संवर्धन का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने कहा कि इंटीग्रेटिव मेडिसिन (एकीकृत चिकित्सा) का भविष्य उज्ज्वल है, क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वास्थ्य देखभाल को अधिक समग्र, सुरक्षित और प्रभावी बनाने की दिशा में अग्रसर है।

डॉ. नायर ने राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग (एनसीआईएसएम) के दृष्टि और लक्ष्य की जानकारी देते हुए कहा कि आयोग का उद्देश्य पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाना तथा वैद्यकीय शिक्षा में गुणवत्ता और पारदर्शिता सुनिश्चित करना है। उन्होंने आयुर्वेदिक चिकित्सकों के अधिकारों, उनके व्यावसायिक दायित्वों और वैश्विक स्तर पर आयुर्वेद की संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला। डॉ. रजनी ने कहा कि एनसीआईएसएम भारतीय चिकित्सा प्रणाली के सशक्तिकरण की दिशा में एक मील का पत्थर है, जो आयुर्वेद को विश्व स्वास्थ्य प्रणाली में सशक्त स्थान दिलाने के लिए कार्यरत है।

उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए एमजीयूजी के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने कहा कि आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐसा अमूल्य अंग है जो विज्ञान, दर्शन और जीवन पद्धति तीनों को एक सूत्र में पिरोता है। एकीकृत चिकित्सा की दिशा में यह सेमिनार भारत के नेतृत्व की नई भूमिका को सशक्त करेगा। इस अवसर पर गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदांतम ने कहा कि आयुर्वेद केवल उपचार की पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है। आरोग्य संगम-2025 पारंपरिक चिकित्सा और आधुनिक विज्ञान के समन्वय का एक प्रेरक मंच है। कार्यक्रम के दौरान आरोग्य संगम सेमिनार की स्मारिका का विमोचन तथा भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र एवं वेबसाइट का उद्घाटन भी किया गया। साथ ही स्पार्क एवं हैकथन रिसर्च वर्क के लिए ईश्वर चंद गुप्ता, राम गोपाल तिवारी, सुरभि द्विवेदी, अंकिता सहानी, नितेश दूबे को सम्मानित किया गया। अतिथियों ने डॉ. शांति भूषण की पुस्तक 'आयुर्वेदा टू प्वाइंट जीरो' का विमोचन भी किया। इसके पहले अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ डा. सुरिंदर सिंह, डा. रजनी ए. नायर, आईसीएमआर एनआइटीएम के निदेशक डा. सुबर्णा राय, पतंजलि आयुर्वेदिक मेडिकल कालेज और अनुसंधान केंद्र नेपाल के प्रोफेसर डा. संजय पोखरेल, विश्व स्वास्थ्य संगठन के साउथ ईस्ट एशिया रीजनल आफिस के टेक्निकल आफिसर डा. पवन गोडटवार, प्रतिष्ठित आयुष विज्ञानी डा. अरविंद चोपड़ा ने दीप प्रज्वलित कर किया। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना एवं धन्वंतरी वंदना ने कार्यक्रम को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की। आभार ज्ञापन उप प्राचार्य डा. सुमित कुमार ने किया। आयोजन सचिव डा. श्रीधर ने बताया कि यह अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 18 अक्टूबर तक

चलेगा, जिसमें पांच देशों सहित भारत के बारह राज्यों से प्रतिष्ठित विशेषज्ञ, चिकित्सक एकीकृत चिकित्सा की संभावनाओं, शोध दिशा और वैश्विक योगदान पर अपने विचार साझा करने आए हैं। उद्घाटन समारोह में बिरला ग्रुप आफ हास्पिटल्स के निदेशक डा. संजय माहेश्वरी, विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डा. जीएस तोमर, यूनाइटेड किंगडम से आए डा. एलेक्स हैंकी, आरोग्य भारती के राष्ट्रीय सचिव डा. अशोक वार्ष्णेय, विवि व आयुर्वेद कालेज के डीन, चिकित्सक, प्राध्यापक और देश विदेश से प्रतिभागी शोधार्थी उपस्थित रहे।

आत्मा के संतुलन का मार्ग दिखाता है आयुर्वेद

गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कालेज) में शुक्रवार को 'आयुर्वप्रवेशिका' कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। यह कार्यक्रम नवप्रवेशित विद्यार्थियों को आयुर्वेद की मूल अवधारणाओं, दर्शन और शिक्षण परंपरा से परिचित कराने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति डा. सुरिंदर सिंह ने कहा कि कहा कि आयुर्वेद भारत की आत्मा है, जो शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का मार्ग दिखाता है। यह विज्ञान व्यक्ति को केवल रोगमुक्त नहीं करता, बल्कि उसके जीवन को सात्त्विकता, संतुलन और समरसता की दिशा में अग्रसर करता है।

विद्यार्थियों को संबोधित करते एमजीयूजी के कुलपति डा. सुरिंदर सिंह। •

एमजीयूजी के आयुर्वेद कालेज में 'आयुर्वप्रवेशिका कार्यक्रम का शुक्रवार को हुआ शुभारंभ

नवप्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदांतम ने आयुर्वेद की महत्ता, उसके जीवनदायिनी सिद्धांतों और गुरु गोरक्षनाथ संस्थान की शैक्षणिक परंपरा का परिचय कराया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद केवल उपचार की पद्धति नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित, सात्त्विक और स्वस्थ बनाए रखने का विज्ञान है। उन्होंने विद्यार्थियों से अनुशासन, समर्पण और साधना की भावना के साथ अध्ययन करने का आग्रह किया। चिकित्सा अधीक्षक डा. अवनीश द्विवेदी ने चिकित्सालय की सुविधाओं, उपचार व रोगियों की सेवा के लिए अपनाई जाने वाली नीतियों की जानकारी दी। इसके बाद विद्यार्थियों की पूर्व परीक्षा आयोजित की गई। तत्पश्चात विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों का परिचय सत्र आयोजित किया गया। 'अपने संस्थान को जानिए' विषय पर प्रस्तुति में संस्था की कार्यप्रणाली, विभागों तथा उपलब्धियों की जानकारी दी गई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाताओं डा. प्रशांत एस. (अकादमिक), डा. रघु राम अचार (छात्र कल्याण), डा. मधुसूदन पुरोहित (अनुसंधान), डा. हरिओम शरण (योजना एवं कार्यान्वयन) तथा अमित कुमार सिंह (परीक्षा नियंत्रक) ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। (विज्ञप्ति)।

आयुर्वेद भारत की आत्मा : डॉ. सिंह

■ गोरखपुर।

सहारा न्यूज ब्यूरो।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में शुक्रवार को 'आयुर्वप्रवेशिका' का शुभारंभ हुआ। यह कार्यक्रम नवप्रवेशित विद्यार्थियों को आयुर्वेद की मूल अवधारणाओं, दर्शन और शिक्षण परंपरा से परिचित कराने के उद्देश्य से आयोजित किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने कहा कि आयुर्वेद भारत की आत्मा है, जो शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का मार्ग दिखाता है। कुलपति ने विद्यार्थियों को परंपरागत ज्ञान और आधुनिक अनुसंधान के समन्वय से कार्य करने का संदेश दिया। इस अवसर पर बीएएमएस के नवप्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने आयुर्वेद की महत्ता, उसके जीवनदायिनी सिद्धांतों और गुरु गोरक्षनाथ संस्थान की शैक्षणिक परंपरा का परिचय कराया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद केवल उपचार की पद्धति नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित, सात्विक और स्वस्थ बनाए रखने का विज्ञान है। चिकित्सालय के चिकित्सा अधीक्षक डा. अवनीश द्विवेदी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए चिकित्सालय की विभिन्न सुविधाओं, उपचार व्यवस्थाओं एवं रोगियों की सेवा के लिए अपनाई जाने वाली नीतियों की जानकारी दी। इसके उपरांत विद्यार्थियों की पूर्व परीक्षा आयोजित की गई, तत्पश्चात विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों का परिचय सत्र संपन्न हुआ। 'अपने संस्थान को जानिए' विषय पर प्रस्तुति में संस्था की कार्यप्रणाली, विभागों तथा उपलब्धियों की जानकारी दी गई। दोपहर के सत्र में विवि के अधिष्ठाताओं डा. प्रशांत एस. (अकादमिक), डा. रघुराम अचार (छात्र कल्याण), डा. मधुसूदन पुरोहित (अनुसंधान), डा. हरि ओम शरण (योजना एवं कार्यान्वयन) तथा अमित कुमार सिंह (परीक्षा नियंत्रक) ने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। अंतिम सत्र में विद्यार्थियों को महाविद्यालय, चिकित्सालय एवं औषधीय वनस्पति उद्यान का परिचयात्मक भ्रमण कराया गया तथा अभिभावकों के साथ संवाद कार्यक्रम आयोजित हुआ।

■ एमजीयूजी के आयुर्वेद कॉलेज में 'आयुर्वप्रवेशिका' का शुभारंभ

■ जीवन को स्वस्थ और संतुलित रखने का विज्ञान है आयुर्वेद : डॉ. वेदांतम

एमजीयूजी में मनाया गया विश्व एनेस्थीसिया दिवस'

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में गुरुवार को विश्व एनेस्थीसिया दिवस मनाया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हेरिटेज इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज वाराणसी के सीनियर ओटी टेक्नीशियन राजेश कुमार पटेल ने एनेस्थीसिया विज्ञान के महत्व, इतिहास और आधुनिक चिकित्सा में इसके योगदान पर प्रकाश डाला। श्री पटेल ने कहा कि इस वर्ष एनेस्थीसिया दिवस का थीम 'एनेस्थीसिओलॉजी इन हेल्थ इमरजेंसी' है। उन्होंने कहा कि आज की चिकित्सा प्रणाली में कई गंभीर बीमारियों के इलाज में सर्जरी की जरूरत पड़ती है और एनेस्थीसिया विशेषज्ञ के बिना इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। इस अवसर पर नर्सिंग की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा, पैरामेडिकल के प्राचार्य डॉ. रोहित श्रीवास्तव, संकाय सदस्य और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

जीवन को स्वस्थ-संतुलित रखने का विज्ञान है आयुर्वेद

एमजीयूजी

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में शनिवार को आयुर्वप्रवेशिका का शुभारंभ हुआ। यह कार्यक्रम नवप्रवेशित विद्यार्थियों को आयुर्वेद की मूल अवधारणाओं, दर्शन और शिक्षण परंपरा से परिचित कराने के उद्देश्य से किया गया।

मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने कहा कि आयुर्वेद भारत की आत्मा है। यह शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का मार्ग दिखाता है। आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने आयुर्वेद की महत्ता, उसके जीवनदायिनी सिद्धांतों और गुरु गोरक्षनाथ संस्थान की शैक्षणिक परंपरा का परिचय कराया। प्राचार्य ने विद्यार्थियों से अनुशासन, समर्पण और साधना की भावना के साथ अध्ययन करने का आग्रह किया।

कॉलेज के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अवनीश द्विवेदी ने विद्यार्थियों को चिकित्सालय की विभिन्न सुविधाओं, उपचार व्यवस्थाओं एवं रोगियों की सेवा के लिए अपनाई जाने वाली नीतियों की जानकारी दी। दोपहर के सत्र में अधिष्ठाता अकादमिक डॉ. प्रशांत एस., छात्र कल्याण डॉ. रघु राम अचार, अनुसंधान डॉ. मधुसूदन पुरोहित, योजना एवं कार्यान्वयन डॉ. हरिओम शरण तथा परीक्षा नियंत्रक अमित कुमार सिंह ने विद्यार्थियों से संवाद किया। अभिभावकों के साथ संवाद कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

स्वास्थ्य देखभाल को अधिक समग्र और प्रभावी बनाती है एकीकृत चिकित्सा: डॉ. रजनी नायर

'एमजीयूजी के आयुर्वेद कॉलेज में एकीकृत चिकित्सा की दिशा में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' का शुभारंभ

संवाददाता

[illegible]

एकीकृत चिकित्सा से स्वास्थ्य देखभाल को मिल रही नई दिशा - डॉ. रजनी नायर

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार "आरोग्य संगम 2025" का शुभारंभ

ग्राम स्वराज्य (संवाददाता)

गोरखपुर, 16 अक्टूबर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में एकीकृत चिकित्सा पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' का शुभारंभ हुआ। मुख्य अतिथि बोर्ड ऑफ एथिक्स एंड रजिस्ट्रेशन फॉर इंडियन सिस्टम ऑफ मेडिसिन (बेरिस्म) की अध्यक्ष डॉ. रजनी ए. नायर ने कहा कि एकीकृत चिकित्सा पारंपरिक और आधुनिक उपचार प्रणालियों के समन्वय से स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक समग्र और प्रभावी बनाती है। उन्होंने कहा कि इसका भविष्य उज्ज्वल है, क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वास्थ्य देखभाल को सुरक्षित और परिणामकारी दिशा प्रदान करती है।

डॉ. नायर ने बताया कि राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग (एनसीआईएसएम) का उद्देश्य भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को वैश्विक पहचान दिलाना और वैद्यकीय शिक्षा में पारदर्शिता लाना है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद वैश्विक स्वास्थ्य प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह ने कहा कि आयुर्वेद भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐसा अमूल्य अंग है जो विज्ञान, दर्शन और जीवन पद्धति तीनों को एक सूत्र में जोड़ता है। यह सेमिनार भारत की चिकित्सा नेतृत्व क्षमता को नई दिशा देगा। प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने कहा कि आयुर्वेद केवल उपचार नहीं, बल्कि स्वस्थ जीवन जीने की कला है। आरोग्य संगम पारंपरिक चिकित्सा और आधुनिक विज्ञान के बीच सेतु का कार्य करेगा।

कार्यक्रम में सेमिनार की स्मारिका का विमोचन, भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र और

वेबसाइट का उद्घाटन तथा स्मार्क एवं हैकथन शोध कार्यों के लिए ईश्वर चंद्र गुप्ता, राम गोपाल तिवारी, सुरभि द्विवेदी, अंकिता सहानी और नितेश दुबे को सम्मानित किया गया। साथ ही डॉ. शांति भूषण की पुस्तक 'आयुर्वेदा टू प्वाइंट ज़ीरो' का विमोचन भी हुआ। दीप प्रज्वलन के साथ सेमिनार का शुभारंभ डॉ. सुरिंदर सिंह, डॉ. रजनी नायर, डॉ. सुबर्णा रॉय (आईसीएमआर-एनआइटीएम), डॉ. संजय पोखरेल (नेपाल), डॉ. पवन गोडटवार (डब्ल्यूएचओ) और डॉ. अरविंद चोपड़ा ने किया। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सरस्वती और धन्वंतरी वंदना ने कार्यक्रम को आध्यात्मिक गरिमा दी।

आभार ज्ञापन डॉ. सुमित कुमार ने किया, जबकि आयोजन सचिव डॉ. श्रीधर ने बताया कि यह अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 18 अक्टूबर तक चलेगा, जिसमें भारत के 12 राज्यों और 5 देशों से प्रतिष्ठित विशेषज्ञ और चिकित्सक भाग ले रहे हैं। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डॉ. संजय माहेश्वरी (बिरला ग्रुप हॉस्पिटल्स), डॉ. जी.एस. तोमर (विश्व आयुर्वेद मिशन), डॉ. एलेक्स हैंकी (यूके), डॉ. अशोक वार्ष्णेय (आरोग्य भारती) सहित विश्वविद्यालय के डीन, चिकित्सक, प्राध्यापक और देश-विदेश से आये शोधार्थी उपस्थित रहे।

शरीर, मन और आत्मा का संतुलन ही वास्तविक स्वास्थ्य : डॉ. संजय पोखरेल

'अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आरोग्य संगम–2025 के पहले दिन वैज्ञानिक सत्रों का आयोजन'

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में गुरुवार को उद्घाटित एकीकृत चिकित्सा केंद्रित अंतरराष्ट्रीय सेमीनार 'आरोग्य संगम – 2025' के तहत पहले दिन विभिन्न विषयों पर वैज्ञानिक सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता नेपाल से आए काय चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. संजय पोखरेल ने 'चिकित्सा पर्यटन और समग्र कल्याण का दायरा' विषय पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. पोखरेल ने आयुर्वेद के मूल सिद्धांतों को स्पष्ट करते हुए कहा कि आयुर्वेद के अनुसार जब शरीर, मन और आत्मा में संतुलन होता है, तभी वास्तविक स्वास्थ्य और सुख की प्राप्ति होती है। उन्होंने बताया कि आहार-विहार, योग–प्राणायाम, ध्यान और पंचकर्म आयुर्वेद में समग्र स्वास्थ्य के प्रमुख अंग हैं। आने वाले समय में यह क्षेत्र रोजगार के नए अवसरों का

भी आधार बनेगा। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. अशोक वार्ष्णेय ने की। द्वितीय सत्र में डॉ. रजनी ए. नायर ने इंटीग्रेटिव मेडिसिन के महत्व को बताते हुए कहा यह एक ऐसी पद्धति है जो पारंपरिक और वैकल्पिक चिकित्सा को मिलाकर रोगों के उपचार और व्यक्तिगत देखभाल पर केंद्रित है। तीसरे सत्र में राष्ट्रीय पारंपरिक चिकित्सा संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. सुबर्णा रॉय ने इंटीग्रेटिव हेल्थ की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए इसके महत्व एवं लाभों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इंटीग्रेटिव हेल्थ के कंपोनेंट के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया और यह उल्लेख किया कि इस क्षेत्र में अनुसंधान अत्यंत आवश्यक है, किन्तु वर्तमान समय में यह प्रक्रिया धीमी गति से प्रगति कर रही है। चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता सीएसआईआर सीआईएमएपी, लखनऊ के सीनियर प्रिंसिपल साइंटिस्ट डॉ. रमेश श्रीवास्तव ने 'आयुर्वेद एवं मानव कल्याण में औषधीय एवं सुगंधित पौधों के सतत उपयोग' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बताया कि किसानों तथा हर्बल एवं एरोमैटिक उद्योगों के लिए औषधीय एवं सुगंधित पौधों की उन्नत किस्मों का विकास किया जा रहा है। सत्र की अध्यक्षता आल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेद के निदेशक डॉ. मनोरंजन शाहू ने की।

पांचवें सत्र में नीमहंस बेंगलुरु में इंटीग्रेटिव मेडिसिन के हेड किशोर रामकृष्णन सिजोफ्रेनिया और इसके लक्षणों के बारे में बताया। उन्होंने डिप्रेशन और उसके आयुर्वेदिक उपचार पर भी प्रकाश डाला।

TOBER 2025 CITY JUSTICE EXPRESS

Integrative Medicine is the Need of the Hour: Dr. Ashok Varshney

Integration of Ayurveda and Western Methods is the Key to Success in Medicine: Dr. G.S. Tomar

JUSTICE EXPRESS

Prof. (Dr.) G.S. Tomar, National Vice President of Arogya Bharati and Founder President of Vishwa Ayurveda Mission, chaired the scientific session of the international conference, Arogya Sangam 2025, organized by Guru Gorakshanath Institute of Medical Sciences, Mahayogi Gorakhnath University, Gorakhpur. In this session, Dr. Aniruddha Joshi, Founder of Atreya Innovations, presented his research paper on "Technology Integration in Diagnosis in the Specific Perspective of Pulse Monitors (Nadi Tarangini)." Dr. Joshi has successfully developed the pulse examination into a practical, simple, and scientific form. This allows traditional knowledge to be made clinically useful through innovation. The second presentation was given by Dr. Arvind Chopra, Director and Chief Rheumatologist at the Center for Rheumatic Diseases, on the topic "Integrative Medicine: Clinical-Based Approach." Dr. Chopra presented various pathologies of joint pain in a simple and scientific way. His presentation will prove extremely beneficial to physicians in the correct diagnosis and treatment of rheumatic diseases. He shared his views on how Ayurveda and Western medicine can jointly benefit these patients. Dr. Rajendra Jain shared his experiences on health preservation, promotion, and treatment through the Ida, Pingala, and Sushumna Nadis, based on Swara Vigyan. In his address as the session chair, Dr. Tomar congratulated all three learned speakers for their excellent presentations and explained that the pulse examination is an important part of the eight-sthan examination of the Ayurvedic diagnostic system. He stated that the Ayurvedic text, Yogaratnakara, describes eight types of patient examination: pulse, urine, feces, tongue, sound, touch, sight, and appearance, which encompasses a complete diagnosis. It is time to innovate this knowledge using today's advanced technology. Expressing his views on rheumatic diseases, he explained that thousands of years ago, Maharishi Charaka presented information on this important disease in the context of Vata Vyadhi and Vatarakta. Furthermore, as the process of development progressed, Madhavakara further elaborated on this disease by describing rheumatism in Madhava Nidan. Presenting this approach based on advanced medical science will prove extremely beneficial for physicians. Sharing his views on integrative medicine, he said that its fundamental objective should be to provide the best possible treatment to patients by incorporating the strengths of each discipline. Successful integration can only be achieved by incorporating other effective disciplines into treatment to bridge the treatment gap. In his address, Dr. Tomar described Ayurveda as highly effective in treating lifestyle disorders. He said that Ayurveda is not only an excellent method for maintaining health but also a panacea for chronic and incurable diseases. The second scientific session was chaired by Dr. Ashok Kumar Varshney, National Organization Secretary of Arogya Bharati. Dr. Pawan Godatwar, Padmashree Dr. Manoranjan Sahu, and Dr. G.S. Tomar presented their research papers. In his address as the session chairman, he congratulated the three learned presenters for their excellent presentations and called integration the need of the hour. People from seven countries and eleven states participated in this international conference.

एमजीयूजी के स्वास्थ्य विज्ञान संकाय पुरातन छात्र संवाद सत्र आयोजित

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विवि के स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय में ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री एवं माइक्रो बायोलॉजी की तरफ से अतिथि व्याख्यान एवं पुरातन छात्र संवाद सत्र का आयोजन किया गया। संकाय अध्यक्ष प्रो. सुनील कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में पूर्व छात्र राजेश्वर कुमार (वर्तमान में सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी, दिल्ली में कार्यरत) ने 'शैक्षणिक ज्ञान से उद्योग तक की यात्रा' विषय पर विद्यार्थियों के साथ अपने औद्योगिक अनुभवों को साझा किया। राजेश्वर कुमार ने बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री एवं माइक्रोबायोलजी के क्षेत्र में उपलब्ध कैरियर अवसरों पर भी चर्चा की। इस अवसर पर डा.अमित कुमार दुबे, डा. प्रेरणा अदिति, डा. रश्मि शाही उपस्थित रहे।

आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के समन्वय से न्यूरोलॉजी में नई संभावनाएं : डॉ. एंटोनियो

एमजीयूजी में आरोग्य संगम-2025 के दूसरे दिन विशेषज्ञों ने रखा एकीकृत चिकित्सा पर दृष्टिकोण

ग्राम स्वराज्य (संवाददाता)

गोरखपुर, 17 अक्टूबर 2025। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में चल रहे तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य

साझा किये। मुख्य वक्ता डॉ. एंटोनियो मरांडी (आयुर्वेद पॉइंट, मिलान, इटली) ने कहा कि आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के संयोजन से न्यूरोलॉजी में नई संभावनाएं खुल रही हैं। योग, औषधीय जड़ी-बूटियां और संतुलित जीवनशैली पार्किंसंस और अल्जाइमर जैसे रोगों के

शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण का संतुलन है। सहयोगात्मक चिकित्सा प्रणाली में विभिन्न विशेषज्ञ मिलकर रोगी के संपूर्ण स्वास्थ्य पर ध्यान देते हैं। डॉ. जी.एस. तोमर (विश्व आयुर्वेद मिशन) ने कहा कि कैंसर, डायबिटीज और एलर्जी जैसे रोगों में आयुर्वेद की भूमिका ... त जीवनशैली ... ा प्राप्त की जा ... आहार-विहार ... स्थ जीवन की कुंजी हैं।

पहले सत्र में डॉ. राजेंद्र जैन (स्वर विज्ञान विशेषज्ञ) ने कहा कि स्वर विज्ञान ध्वनि के प्रभावों का अध्ययन करने वाला प्राचीन भारतीय विज्ञान है, जो मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डालता है। दूसरे सत्र में डॉ. अनिरुद्ध जोशी (फाउंडर एवं सीईओ, आत्रेय इनोवेशंस) ने 'नाड़ी तरंगिनी' नामक एआई आधारित पल्स डायग्नोस्टिक डिवाइस का परिचय कराया, जो वात, पित्त और कफ के विश्लेषण से रोग निदान में मदद करती है। तीसरे सत्र में डॉ. अरविंद चोपड़ा (रूमेटोलॉजिस्ट) ने कहा कि इंटीग्रेटिव मेडिसिन आधुनिक और पारंपरिक चिकित्सा का संतुलित मिश्रण है, जो रोगी की व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार उपचार योजना प्रदान करती है। चौथे सत्र में डॉ. पवन कोडतवार (विश्व स्वास्थ्य संगठन, साउथ ईस्ट एशिया रीजनल ऑफिस) ने कहा कि समग्र चिकित्सा पद्धतियाँ विश्वभर में लोकप्रिय हो रही हैं। ये रोग की जड़ों तक जाकर उपचार करती हैं और आधुनिक चिकित्सा की पूरक सिद्ध हो रही हैं।

अंतिम सत्र में डॉ. मनोरंजन साहू ने शल्य चिकित्सा में समग्र दृष्टिकोण की चर्चा की। उन्होंने बताया कि आयुर्वेदिक औषधियों और क्षार सूत्र पद्धति का प्रयोग आधुनिक सर्जरी में स्वास्थ्य लाभ की गति बढ़ा सकता है। डॉ. त्रिविक्रम त्रिपाठी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सेमिनार के दौरान वक्ताओं ने इस बात पर एकमत सहमति व्यक्त की कि भविष्य की चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद, योग और आधुनिक विज्ञान के समन्वय पर आधारित होगी, जिससे स्वास्थ्य क्षेत्र नईं दशाएं खुलेंगी।

एमजीयूजी के स्वास्थ्य विज्ञान संकाय पुरातन छात्र संवाद सत्र का आयोजन'

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय में ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री एवं माइक्रोबायोलॉजी की तरफ से अतिथि व्याख्यान एवं पुरातन छात्र संवाद सत्र का आयोजन किया गया। संकाय अध्यक्ष प्रो. सुनील कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में पूर्व छात्र राजेश्वर कुमार (वर्तमान में सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मेसी, दिल्ली में कार्यरत) ने 'शैक्षणिक ज्ञान से उद्योग तक की यात्रा' विषय पर विद्यार्थियों के साथ अपने औद्योगिक अनुभवों को साझा किया। राजेश्वर कुमार ने बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री एवं माइक्रोबायोलॉजी के क्षेत्र में उपलब्ध कैरियर अवसरों पर भी चर्चा की। इस अवसर पर डॉ. अमित कुमार दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. रश्मि शाही, डॉ. अवेद्यनाथ सिंह, धनंजय पांडेय सहित संकाय के विद्यार्थि उपस्थित रहे।

गोरखपुर (गो०मे०सं०)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के चिकित्सा विज्ञान संकाय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की शिवाजी इकाई के

विद्यार्थियों द्वारा ग्राम सोनबरसा में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के मुख्य अतिथि श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में ग्रामवासियों को स्तन कैंसर के लक्षण, कारण, निदान तथा उपचार के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समय पर जांच एवं उचित उपचार से इस रोग का पूर्ण रूप से उपचार संभव है। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत महिला सुरक्षा, महिला उद्यमिता एवं महिला सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी ग्रामवासियों को प्रदान की। इस अवसर पर स्वयंसेवकों ने गांव में स्वच्छता अभियान चलाया, जिसके माध्यम से ग्रामवासियों को स्वच्छ पर्यावरण बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही महिला हेल्पलाइन नंबरों 1090, 181, 112 आदि की जानकारी दी। ग्राम प्रधान ओम प्रकाश ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक जिस समर्पण एवं अनुशासन के साथ ग्रामों में सामाजिक जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहे हैं, वह अत्यंत सराहनीय है।

एमजीयूजी के विद्यार्थियों ने गांव में लगाया जागरूकता शिविर

नव अमृत प्रभात संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के चिकित्सा विज्ञान संकाय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की शिवाजी इकाई के विद्यार्थियों द्वारा ग्राम सोनबरसा में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के मुख्य अतिथि श्री गोरखनाथ मेडिकल

कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में ग्रामवासियों को स्तन कैंसर के लक्षण, कारण, निदान तथा उपचार के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समय पर जांच एवं उचित उपचार से इस रोग का पूर्ण रूप से उपचार संभव है। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत महिला सुरक्षा, महिला उद्यमिता एवं महिला सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी ग्रामवासियों को प्रदान की। इस अवसर पर स्वयंसेवकों ने गांव में स्वच्छता अभियान चलाया, जिसके माध्यम से ग्रामवासियों को स्वच्छ पर्यावरण बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही महिला हेल्पलाइन नंबरों 1090, 181, 112 आदि की जानकारी दी। ग्राम प्रधान ओम प्रकाश ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक जिस समर्पण एवं अनुशासन के साथ ग्रामों में सामाजिक जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहे हैं, वह अत्यंत सराहनीय है।

इण्टीग्रेटिव मेडिसिन समय की माँग - डॉ अशोक वार्ष्णेय

आयुर्वेद एवं पाश्चात्य विधा का समन्वय चिकित्सा की सफलता का मूल मंत्र- डॉ जी एस तोमर

गुरु गोरक्षनाथ इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस आरोग्य संगम 2025 के वैज्ञानिक सत्र की अध्यक्षता आरोग्य भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं विश्व आयुर्वेद मिशन के संस्थापक अध्यक्ष प्रो.(डॉ.) जी एस तोमर ने की। इस सत्र में आत्रेय इनोवेशन के संस्थापक डॉ अनिरुद्ध जोशी ने ह्टेक्नोलॉजी इंटीग्रेशन इन डायग्नोसिस पल्स मोनीटर (नाड़ी तरंगिणी) के विशिष्ट परिप्रेक्ष्य मेंह विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। डॉ जोशी ने नाड़ी परीक्षा को व्यावहारिक, सरल एवं वैज्ञानिक स्वरूप में विकसित करने का सफल प्रयास किया है। इससे पारम्परिक ज्ञान को नवाचार के माध्यम से चिकित्सोपयोगी बनाया जा सकता है। दूसरा प्रस्तुतीकरण सेन्टर फॉर रुमेटिक डिसीजेज के डाइरेक्टर एण्ड चीफ रुमेटोलॉजिस्ट डॉ अरविन्द चोपरा ने ह्इन्टीग्रेटिव मेडिसिन क्लिनिकल बेस्ड एप्रोचह विषय पर दिया। डॉ चोपरा ने जोड़ों के दर्द की विभिन्न विकृतियों को अत्यंत सरल एवं वैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत किया। उनका प्रस्तुतिकरण चिकित्सकों को रुमेटिक डिसीजेज के सही निदान एवं चिकित्सा में अत्यंत लाभकारी साबित होगा। आयुर्वेद एवं पाश्चात्य चिकित्सा विधा किस प्रकार सम्मिलित रूप से इन रोगियों को स्वास्थ्य लाभ पहुँचा सकती है इस पर अपने विचार साझा किए। डॉ राजेन्द्र जैन ने स्वर विज्ञान के आधार पर इडा, पिंगला एवं सुषुम्ना नाड़ी के माध्यम से स्वास्थ्य संरक्षण, संवर्धन एवं रोग उपचार पर अपने अनुभव साझा किए। सत्राध्यक्ष के रूप में अपने

उद्बोधन में डॉ तोमर ने तीनों ही विद्वान वक्ताओं को उनके उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण के लिए बधाई दी एवं बताया कि नाड़ी परीक्षा आयुर्वेदीय निदान पद्धति की अष्ट स्थान परीक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग है। उन्होंने कहा कि योगरत्नाकर नामक आयुर्वेदीय ग्रंथ में नाड़ी, मूत्र, मल, जिह्वा, शब्द, स्पर्श, दृक एवं आकृति अष्टविध रोगी परीक्षा का वर्णन है जो सम्पूर्ण निदान को अपने आप में समाहित करता है। इस ज्ञान को आज की विकसित तकनीक के प्रयास से नवाचार करना समय की आवश्यकता है। वहीं रुमेटिक डिसीजेज के सम्बन्ध में अपने विचार रखते हुए उन्होंने बताया कि हजारों वर्ष पूर्व महर्षि चरक ने वातव्याधि एवं वातरक्त के संदर्भ में इस महत्वपूर्ण रोग विशेष की जानकारी प्रस्तुत की है। यही नहीं विकास के क्रम में माधवकार ने माधव निदान में आमवात का वर्णन कर इस रोग को और अधिक विस्तार दिया है। चिकित्सा विज्ञान के विकसित परीक्षणों के आधार पर इसका प्रस्तुतिकरण चिकित्सकों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। उन्होंने इन्टीग्रेटिव मेडिसिन के सम्बन्ध में अपने विचार साझा करते हुए कहा कि हर विधा की अच्छाइयों को समाविष्ट कर रोगी को आदर्श चिकित्सा उपलब्ध कराना ही इसका मूलभूत उद्देश्य होना चाहिए। ट्रीटमेंट गैप को भरने के लिए अन्य प्रभावी विधाओं का चिकित्सा में समावेश ही सफल इण्टीग्रेशन हो सकता है। डॉ तोमर ने अपने उद्बोधन में जीवनशैली जन्य विकारों के उपचार में आयुर्वेद को अत्यंत प्रभावी बताया। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद न केवल स्वास्थ्य संरक्षण के लिए उत्कृष्ट विधा है अपितु जीर्ण एवं कष्ट साध्य रोगों के लिए भी संजीवनी है। द्वितीय वैज्ञानिक सत्र की अध्यक्षता आरोग्य भारती के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ अशोक कुमार वार्ष्णेय ने की। इस सत्र डॉ पवन गोदातवर, पद्मश्री डॉ मनोरंजन साहू एवं डॉ जी एस तोमर ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। सत्राध्यक्ष के रूप में अपने उद्बोधन में उन्होंने तीनों विद्वान प्रस्तोताओं को उनके उत्कृष्ट प्रस्तुतिकरण के लिए बधाई दी एवं इण्टीग्रेशन को समय की माँग बताया। इस अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में सात देशों के एवं ग्यारह प्रदेशों के लोगों ने प्रतिभाग किया।

एमजीयूजी के स्वास्थ्य विज्ञान संकाय पुरातन छात्र संवाद सत्र का आयोजन

नव अमृत प्रभात संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के स्वास्थ्य एवं जीवन विज्ञान संकाय में ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में डिपार्टमेंट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री

एवं माइक्रोबायोलॉजी की तरफ से अतिथि व्याख्यान एवं पुरातन छात्र संवाद सत्र का आयोजन किया गया। संकाय अध्यक्ष प्रो. सुनील कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में पूर्व छात्र राजेश्वर कुमार (वर्तमान में सीरम इंस्टिट्यूट ऑफ फामेसी, दिल्ली में कार्यरत) ने ह्यशैक्षणिक ज्ञान से उद्योग तक की यात्राह्व विषय पर विद्यार्थियों के साथ अपने औद्योगिक अनुभवों को साझा किया। राजेश्वर कुमार ने बायोटेक्नोलॉजी, बायोकेमिस्ट्री एवं माइक्रोबायोलॉजी के क्षेत्र में उपलब्ध कैरियर अवसरों पर भी चर्चा की। इस अवसर पर डॉ. अमित कुमार दुबे, डॉ. प्रेरणा अदिति, डॉ. रश्मि शाही, डॉ. अवेद्यनाथ सिंह, धनंजय पांडेय सहित संकाय के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

एमजीयूजी के विद्यार्थियों ने गांव में लगाया जागरूकता शिविर'

संवाददाता

'**गोरखपुर।** महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के चिकित्सा विज्ञान संकाय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की शिवाजी इकाई के विद्यार्थियों द्वारा ग्राम सोनबरसा में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर के मुख्य अतिथि श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में ग्रामवासियों को स्तन कैंसर के लक्षण, कारण, निदान तथा उपचार के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समय पर जांच एवं उचित उपचार से इस रोग का पूर्ण रूप से उपचार संभव है। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत महिला सुरक्षा, महिला उद्यमिता एवं महिला सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी ग्रामवासियों को प्रदान की। इस अवसर पर स्वयंसेवकों ने गांव में स्वच्छता अभियान चलाया, जिसके माध्यम से ग्रामवासियों को स्वच्छ पर्यावरण बनाए रखने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही महिला हेल्पलाइन नंबरों 1090, 181, 112 आदि की जानकारी दी। ग्राम प्रधान ओम प्रकाश ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक जिस समर्पण एवं अनुशासन के साथ ग्रामों में सामाजिक जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहे हैं, वह अत्यंत सराहनीय है।

एमजीयूजी के विद्यार्थियों ने गांव में लगाया जागरूकता शिविर

ग्राम स्वराज्य (संवाददाता)

गोरखपुर, 17 अक्टूबर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के चिकित्सा विज्ञान संकाय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की शिवाजी इकाई के विद्यार्थियों द्वारा ग्राम सोनबरसा में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर के मुख्य अतिथि श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में ग्रामवासियों को स्तन कैंसर के लक्षण, कारण, निदान तथा उपचार के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समय पर जांच एवं उचित उपचार से इस रोग का पूर्ण रूप से उपचार संभव है। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दुबे ने मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत महिला सुरक्षा, महिला उद्यमिता एवं महिला सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी ग्रामवासियों को प्रदान की।

इस अवसर पर स्वयंसेवकों ने गांव में स्वच्छता अभियान चलाया, जिसके माध्यम से ग्रामवासियों को स्वच्छ पर्यावरण बनाये रखने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही महिला हेल्पलाइन नंबरों 1090, 181, 112 आदि की जानकारी दी। ग्राम प्रधान ओम प्रकाश ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक जिस समर्पण एवं अनुशासन के साथ ग्रामों में सामाजिक जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहे हैं, वह अत्यंत सराहनीय है।

आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के समन्वय से बनेंगी न्यूरोलॉजी में नई संभावनाएं : डॉ. एंटोनियो

- एमजीयूजी के आयुर्वेद कॉलेज में एकीकृत चिकित्सा पर केंद्रित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' का दूसरा दिन
- आयुर्वेद सम्मत जीवनशैली से प्राप्त हो सकती है सम्पूर्ण आरोग्यता : डॉ. जीएस तोमर

गोरखपुर (नो॰मै॰सं॰)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में एकीकृत चिकित्सा पर केंद्रित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' के दूसरे दिन शुक्रवार को कई वैज्ञानिक सत्रों का आयोजन किया गया। इसमें देश-विदेश से आए विषय विशेषज्ञों ने अपने शोध कार्यों के उद्धरण के साथ अपने विचार प्रस्तुत किए। शुक्रवार को एक विशेष वैज्ञानिक सत्र में मुख्य वक्ता आयुर्वेद पॉइंट, मिलान इटली के डॉ. एंटोनियो मरांडी ने 'कोलैबोरेटिव मेडिसिन एंड साइंस इन न्यूरोलॉजी' विषय पर विस्तार से बताते हुए कहा कि आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के समन्वय से न्यूरोलॉजी में नई संभावनाएं बन सकती हैं। आयुर्वेद में विभिन्न जड़ी-बूटियों और योग के माध्यम से न्यूरोलॉजिकल विकारों के इलाज में मदद मिल सकती है, जैसे कि पार्किंसंस और अल्जाइमर। उन्होंने कहा कि आयुर्वेदिक पद्धतियों का उपयोग करके न्यूरोलॉजिकल विकारों के लक्षणों को कमी और रोगी के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद मिलती है। एक अन्य सत्र में वर्चुअल माध्यम से जुड़े स्विस आयुर्वेद मेडिकल एकेडमी स्विट्जरलैंड के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. सिमोन हंकाइजर ने बताया कि आधुनिक युग में स्वास्थ्य की अवधारणा केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण पर आधारित है। उन्होंने कहा कि सहयोगात्मक चिकित्सा में विभिन्न विशेषज्ञ एक साथ मिलकर रोगी के शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं। इससे रोग का कारण, लक्षण, और रोगी की जीवनशैली तीनों पहलुओं को ध्यान में रखकर उपचार किया जाता है। उन्होंने कहा कि भविष्य की चिकित्सा प्रणाली समग्र और सहयोगात्मक दृष्टिकोण पर आधारित होगी, जिसमें परंपरागत और आधुनिक चिकित्सा का सम्मिलन होगा। विशेष वैज्ञानिक सत्रों की श्रृंखला में एक सत्र के मुख्य वक्ता विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डॉ. जीएस तोमर ने कुछ मुख्य बीमारियों जैसे कैंसर, डायबिटीज, एलर्जी के इलाज में आयुर्वेद के योगदान के विषय के बारे में बताया। उन्होंने असाध्य रोग को साध्य करने में आयुर्वेद की भूमिका और जीवनशैली पर भी चर्चा की और कहा कि आयुर्वेद सम्मत जीवनशैली से सम्पूर्ण आरोग्यता को प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि शरीर और मन के अनुकूल आहार हमें स्वस्थ रखने में मदद करता है। इसके पूर्व प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता स्वर विज्ञान एवं वास्तु विशेषज्ञ डॉ. राजेंद्र जैन ने स्वर विज्ञान पर चर्चा करते हुए बताया की स्वर विज्ञान एक प्राचीन भारतीय विज्ञान है जो ध्वनि और उसके प्रभावों का अध्ययन करता है। यह विज्ञान वेदों और उपनिषदों में वर्णित है और इसका उपयोग संगीत, योग और अध्यात्म में किया जाता है। स्वर विज्ञान में ध्वनि के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है, जिसका आधार प्रति पल लिए और छोड़े जाने वाले श्वास व प्रश्वास है जो व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, मानसिक, और शारीरिक स्वास्थ्य प्रदान करता है। उन्होंने बताया कि स्वर परिवर्तन के बाद शरीर में विभिन्न रासायनिक परिवर्तन होते हैं, जो शरीर के कार्यों को प्रभावित करते हैं। शुक्रवार को द्वितीय सत्र के मुख्य अतिथि आत्रेय इनोवेशंस नाड़ी तरंगिनि के फाउंडर एंड सीईओ डॉ. अनिरुद्ध जोशी ने 'टेक्नोलॉजी इन डायग्नोसिस विथ नाड़ी तरंगिनि' पर व्याख्यान देते हुए कहा कि नाड़ी तरंगिनी एक एडवांस्ड एआई-पावर्ड पल्स डायग्नोस्टिक डिवाइस है। यह आयुर्वेदिक पद्धति को आधुनिक तकनीक के साथ मिलाकर रोगों का पता लगाने में मदद करती है। यह डिवाइस आयुर्वेदिक पैरामीटर्स वात, पित्त और कफ की जांच करके स्वास्थ्य के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करती है। तृतीय सत्र के मुख्य वक्ता प्रसिद्ध रुमेटोलॉजिस्ट डॉ. अरविंद चोपड़ा रहे। उन्होंने इंटीग्रेटिव मेडिसिन क्लिनिकल बेस्ड एप्रोच के विषय में बताते हुए कहा एकीकृत चिकित्सा एक ऐसी पद्धति है जो आधुनिक चिकित्सा विज्ञान और पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को मिलाकर रोगों के इलाज के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है। इस पद्धति में चिकित्सक रोगी के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उपचार के लिए विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों का संयोजन करते हैं। इसमें रोगों के इलाज के लिए आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों, दवाओं के साथ आयुर्वेद, योग, ध्यान और अन्य पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को भी शामिल किया जाता है। यह पद्धति रोगी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और स्वास्थ्य लक्ष्यों के अनुसार उपचार योजना तैयार करती है। चतुर्थ सत्र में मुख्य वक्ता विश्व स्वास्थ्य संगठन के साउथ ईस्ट एशिया रीजनल ऑफिस के टेक्निकल ऑफिसर डॉ. पवन गोदातवार ने 'समग्र चिकित्सा का वैश्विक परिदृश्य' पर व्याख्यान देते हुए कहा कि पारंपरिक एवं समग्र चिकित्सा पद्धतियाँ आज विश्वभर में लोगों के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव डाल रही हैं। इन पद्धतियों के माध्यम से रोगों को जड़ों तक उपचार संभव हो रहा है, साथ ही यह आधुनिक चिकित्सा का भी पूरक बनती जा रही है। डॉ. पवन ने कहा कि एकीकृत चिकित्सा माध्यम से उपचार से रोगी स्वस्थ हो रहे हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करती हैं। उन्होंने कहा कि समग्र चिकित्सा का वैश्विक परिदृश्य यह दर्शाता है कि स्वास्थ्य केवल उपचार का नहीं, बल्कि संपूर्ण कल्याण का विषय है। पंचम सत्र में डॉ. मनोरंजन साहू ने शल्य चिकित्सा में समग्र दृष्टिकोण विषय पर व्याख्यान देते हुए वाराणसी में प्राचीन शल्य चिकित्सा की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद में विभिन्न प्रकार के व्रण (घाव) एवं उनके उपचार का विस्तृत वर्णन मिलता है, जो किसी भी शल्य प्रक्रिया की मूलभूत आवश्यकता है। डॉ. साहू ने बताया कि आयुर्वेदिक औषधियों का आधुनिक शल्य चिकित्सा में समन्वित प्रयोग रोगी के शीघ्र स्वस्थ्य लाभ में सहायक सिद्ध हो सकता है। उन्होंने क्षार सूत्र जो आयुर्वेद की एक अत्यंत प्रभावशाली और वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति है, के बारे में बताया। इस सत्र में डॉ. विधिकृष्ण त्रिपाठी ने भी विचार व्यक्त किए।

एमजीयूजी के विद्यार्थियों ने गांव में लगाया जागरूकता शिविर

गोरखपुर (नो॰मै॰सं॰)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के चिकित्सा विज्ञान संकाय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की शिवाजी इकाई के

न्यूरोलाजिकल विकारों के उपचार में आयुर्वेद से मिल सकती है मदद

गोरखपुर : आयुर्वेद पाइंट मिलान, इटली के डा. एंटोनियो मरांडी ने कहा कि आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के समन्वय से न्यूरोलाजी में नई संभावनाएं बन सकती हैं। विभिन्न जड़ी-बूटियों और योग के माध्यम से न्यूरोलाजिकल विकारों, खासकर पार्किंसंस और अल्जाइमर के उपचार में मदद मिल सकती है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के आयुर्वेद कालेज में एकीकृत चिकित्सा पर त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' आयोजित किया गया है। डा. एंटोनियो सेमिनार के दूसरे दिन शुक्रवार को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। विषय था- 'कोलैबोरेटिव मेडिसिन एंड साइंस इन न्यूरोलाजी'।

सेमिनार को संबोधित करते डा. राजेंद्र जैन। ● सौ. एमजीयूजी

आनलाइन जुड़े स्विस आयुर्वेद मेडिकल एकेडमी, स्विट्जरलैंड के संस्थापक अध्यक्ष डा. सिमोन हंकाइजर ने कहा कि आधुनिक युग में स्वास्थ्य की अवधारणा केवल रोगों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण पर आधारित है। सहयोगात्मक चिकित्सा में विभिन्न विशेषज्ञ एक साथ मिलकर रोगी के शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक स्वास्थ्य का ध्यान रखते हैं। इससे रोग का कारण, लक्षण और रोगी की जीवनशैली, तीनों पहलुओं को ध्यान में रखकर उपचार किया जाता है। भविष्य की चिकित्सा प्रणाली समग्र और सहयोगात्मक दृष्टिकोण पर आधारित होगी, जिसमें परंपरागत और आधुनिक चिकित्सा का सम्मिलन होगा। विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डा. जीएस तोमर ने कैंसर, मधुमेह, एलर्जी के उपचार में आयुर्वेद के योगदान पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि आयुर्वेदसम्मत जीवनशैली से संपूर्ण आरोग्यता प्राप्त की जा सकती है। स्वर विज्ञान एवं वास्तु विशेषज्ञ डा. राजेंद्र जैन ने कहा कि स्वर विज्ञान एक प्राचीन भारतीय विज्ञान है जो ध्वनि और उसके प्रभावों का अध्ययन करता है। आत्रेय इनोवेशंस के संस्थापक डा. अनिरुद्ध जोशी, रुमेटोलाजिस्ट डा. अरविंद चोपड़ा, विश्व स्वास्थ्य संगठन के डा. पवन कोडतवार ने भी विचार व्यक्त किए। (विज्ञप्ति)

एकीकृत चिकित्सा पर केंद्रित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम-2025' का दूसरा दिन

- आयुर्वेद और आधुनिक चिकित्सा के समन्वय से बनेंगी न्यूरोलॉजी में नई संभावनाएं : डॉ. एंटोनियो
- आयुर्वेद सम्मत जीवनशैली से प्राप्त हो सकती है सम्पूर्ण आरोग्यता : डॉ. जीएस तोमर

समग्र दृष्टिकोण आधारित चिकित्सा आज की जरूरत

गोरखपुर। चिकित्सा की सभी विधियाओं के समन्वित प्रणाली का उद्देश्य संपूर्ण और समग्र दृष्टिकोण पर आधारित उपचार पद्धति को अपनाना है। यह आज की जरूरत भी है। चिकित्सा प्रणाली का एकीकरण तीन प्रमुख क्षेत्रों संसाधन, शिक्षा और व्यवहारिक प्रयोग में संभव है। ये बातें अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान नई दिल्ली के काय चिकित्सा विभाग के प्रो. डॉ. विट्ठल हुड्डर ने शनिवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में चल रहे सेमिनार के समापन अवसर पर कहीं। एकीकृत चिकित्सा पर केंद्रित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम–2025' के समापन दिवस के विशेष सत्र में डॉ. विट्ठल हुड्डर ने समन्वित चिकित्सा प्रणाली में कैंसर उपचार के आयुर्वेदिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय भाषण देते हुए एमआईटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी पुणे के प्रो. एमेरिटस डॉ. एलेक्स हैंकी ने समन्वित जीवविज्ञान विषय पर चर्चा करते हुए बताया कि समग्र जीवविज्ञान ही समग्र स्वास्थ्य और जीवन शक्ति को वैज्ञानिक रूप से समझाने में सक्षम है। इस अवसर पर सेमिनार के आयोजन में सहयोग करने वाले आयोजकों को सम्मानित भी किया गया। ब्यूरो

समग्र दृष्टिकोण आधारित चिकित्सा आज की जरूरत : डॉ. विट्ठल

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर (एमजीयूजी) के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में एकीकृत चिकित्सा पर केंद्रित तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार 'आरोग्य संगम 2025' का शनिवार को समापन हुआ। समापन दिवस के विशेष सत्र में अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान नई दिल्ली के काय चिकित्सा विभाग के प्रोफेसर डॉ. विट्ठल हुड्डर ने समन्वित चिकित्सा प्रणाली में कैंसर उपचार के आयुर्वेदिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला।

डॉ. विट्ठल ने विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा बताए गए पारंपरिक, पूरक एवं समन्वित चिकित्सा पद्धतियों के सिद्धांतों का उल्लेख किया और बताया कि समन्वित चिकित्सा प्रणाली का उद्देश्य संपूर्ण और समग्र दृष्टिकोण पर आधारित उपचार पद्धति को अपनाना है। यह आज की जरूरत भी है। उन्होंने कहा कि चिकित्सा प्रणाली का एकीकरण तीन प्रमुख क्षेत्रों संसाधन, शिक्षा और व्यवहारिक प्रयोग में संभव है। अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया कि उनके

■ एमजीयूजी के आयुर्वेद कालेज में त्रिदिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का समापन

कैंसर उपचार के आयुर्वेदिक दृष्टिकोण पर डाला प्रकाश

चिकित्सालय में स्तन कैंसर और फेफड़ों का कैंसर सबसे सामान्य रूप से पाए जाने वाले रोग हैं। साथ ही उन्होंने कैंसर के आयुर्वेदिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला तथा रसायन चिकित्सा के महत्व को विस्तार से समझाया।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए एमआईटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी पुणे के प्रोफेसर एमेरिटस डॉ. एलेक्स हैंकी ने समन्वित जीवविज्ञान विषय पर चर्चा करते हुए बताया कि समग्र जीवविज्ञान ही समग्र स्वास्थ्य और जीवन शक्ति को वैज्ञानिक रूप से समझाने में सक्षम है। इस अवसर पर सेमिनार के आयोजन में सहयोग करने वाले आयोजकों को सम्मानित भी किया गया।

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार के समापन अवसर पर गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम, डॉ. आर. पुष्पम, डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. धन्या वी. नायर, आचार्य साध्वी नंदन पांडेय, डा. टी.एम. त्रिपाठी, डा. प्रीति पांडेय सहित आयुर्वेद कालेज के अन्य प्राध्यापक, चिकित्सक और शोधार्थी उपस्थित रहे।

एमजीयूजी में धूमधाम से मनाई गई धन्वंतरि जयंती

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के आयुर्वेद कॉलेज और आईकेएस सेंटर फॉर ट्रेडिशनल मेडिसिन के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को आयुर्वेद के आराध्य भगवान धन्वंतरि की जयंती धूमधाम से मनाई गई। इसमें अंतरराष्ट्रीय सेमिनार ''आरोग्य संगम- 2025'' में आए प्रतिभागियों ने भी सहभागिता दर्ज कराई। यजमान रूप में आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम और अन्य गणमान्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर इटली से आए डॉ. एलेक्स हैंकी ने आत्मीय स्वागत के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने धन्वंतरि यज्ञ के अनुभव को दिव्य और सुखद कहा। मुख्य अतिथि महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. रामचंद्र रेड्डी ने कहा कि हिंदू दर्शन में ही ऐसा अद्वितीय तत्व है जहां आरोग्य के देवता की उपासना की जाती है। इस अवसर पर डॉ. पवन गोडटवार, डॉ. नवोदय राजू ने भी विचार व्यक्त किए। ब्यूरो

वैदिक मंत्रोच्चार संग याद किए गए धन्वंतरि

- महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में धन्वंतरि जयंती पर आयोजित हुआ विशेष कार्यक्रम
- इटली से आए डा. एलेक्स हैंकी ने अपने संबोधन में आत्मीय स्वागत के लिए दिया धन्यवाद

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज और आइकेएस सेंटर फार ट्रेडिशनल मेडिसिन के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को आयुर्वेद के आराध्य भगवान धन्वंतरि जी की जयंती उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर आचार्य साध्वी नंदन के संचालन में धन्वंतरि यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें वैदिक मंत्रोच्चार के साथ लोककल्याण और आरोग्य की प्रार्थना की गई। यजमान रूप में आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदांतम और अन्य गणमान्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर इटली से आए डा. एलेक्स हैंकी ने अपने संबोधन में आत्मीय स्वागत के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने धन्वंतरि यज्ञ के अनुभव को दिव्य और सुखद कहा।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में धन्वंतरि यज्ञ करते गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदांतम व अन्य • मवोवि

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित महायोगी गुरु गोरखनाथ राज्य आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. रामचंद्र रेड्डी ने कहा कि हिंदू दर्शन में ही ऐसा अद्वितीय तत्व है, जहां आरोग्य के देवता की उपासना की जाती है। उन्होंने कहा कि आज विश्व में एकीकृत चिकित्सा पद्धतियों की ओर बढ़ता रुझान इस बात का प्रमाण है कि एक समग्र चिकित्सा पद्धति वैश्विक स्वास्थ्य का आधार बन सकता है। इस अवसर पर डा. पवन गोडटवार, डा. नवोदय राजू ने भी विचार व्यक्त किए।

निर्माणाधीन परिसर

01 निर्माणाधीन क्रीडांगन

02 निर्माणाधीन फार्मेसी संकाय

03 निर्माणाधीन प्रेक्षागृह

04 निर्माणाधीन शिक्षक आवास

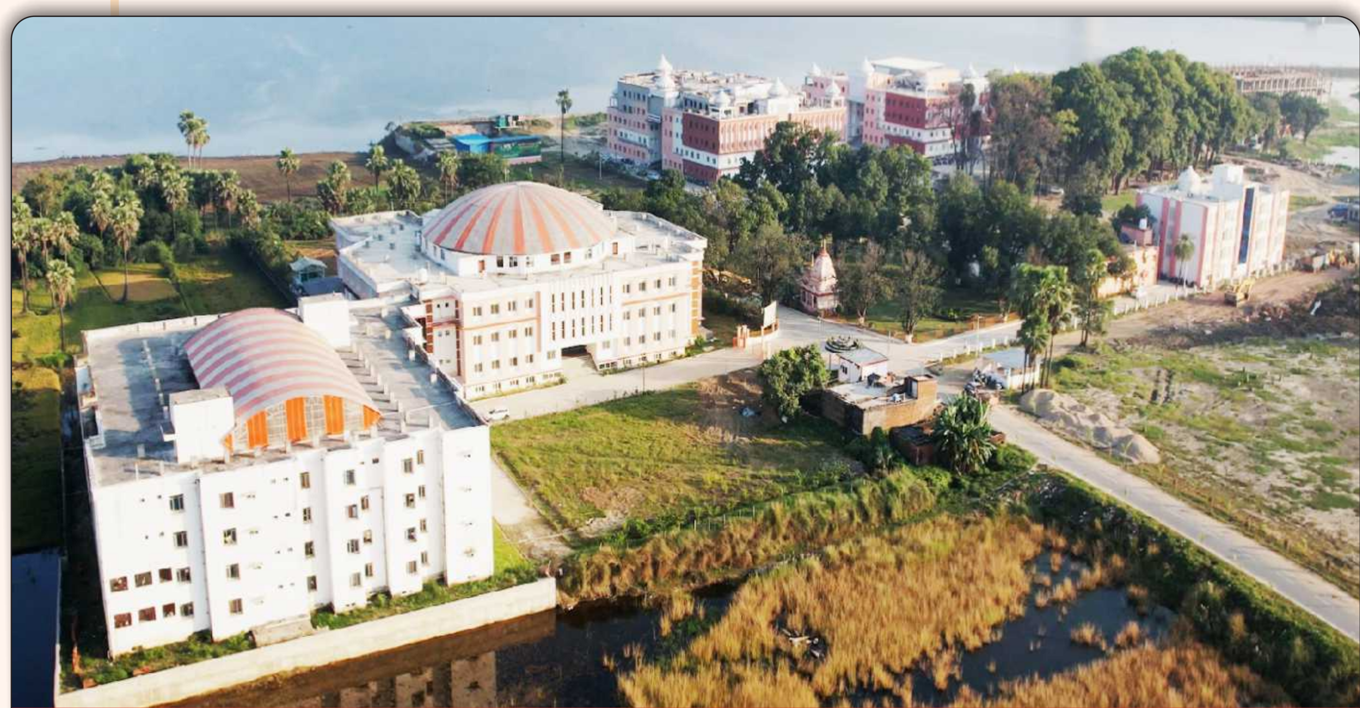

05 विश्वविद्यालय परिसर का वायवीय दृश्य

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर
MAHAYOGI GORAKHNATH UNIVERSITY GORAKHPUR
स्वस्ति पन्थामनुचरेम्

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

01 डॉ सुधांशु सिंह

02 डॉ. अरविन्द चोपड़ा

03 डॉ. पवन कोडतवार

04 डॉ. सुबरना रॉय

05 डॉ. संजय पोखरोल

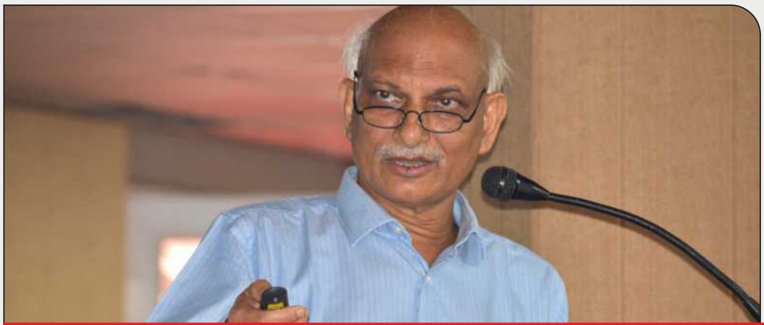

06 डॉ. मनोरंजन शाहू

07 आयुर्वेद दिवस धनवन्तरि यज्ञ

08 डॉ. रजनी ए नायर

प्रधान सम्पादक
डॉ. विमल कुमार दूबे

सम्पादक
आचार्य साध्वीनन्दन पाण्डेय

संपादक मण्डल
श्री रोहित श्रीवास्तव, डॉ. अनुपमा ओझा

ग्राफिक्स डिजाइनर: श्री शारदानन्द पाण्डेय

mguniversitygkp@mgug.ac.in
https://www.mgug.ac.in/
+91-9415266014, +91-9935904499, +91-9794299451
Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur